वार्षिक 100/– रुपये नवम्बर 2011 वर्ष 13, अंक 01 एक प्रति 10/–रुपये

गोसम्पदा

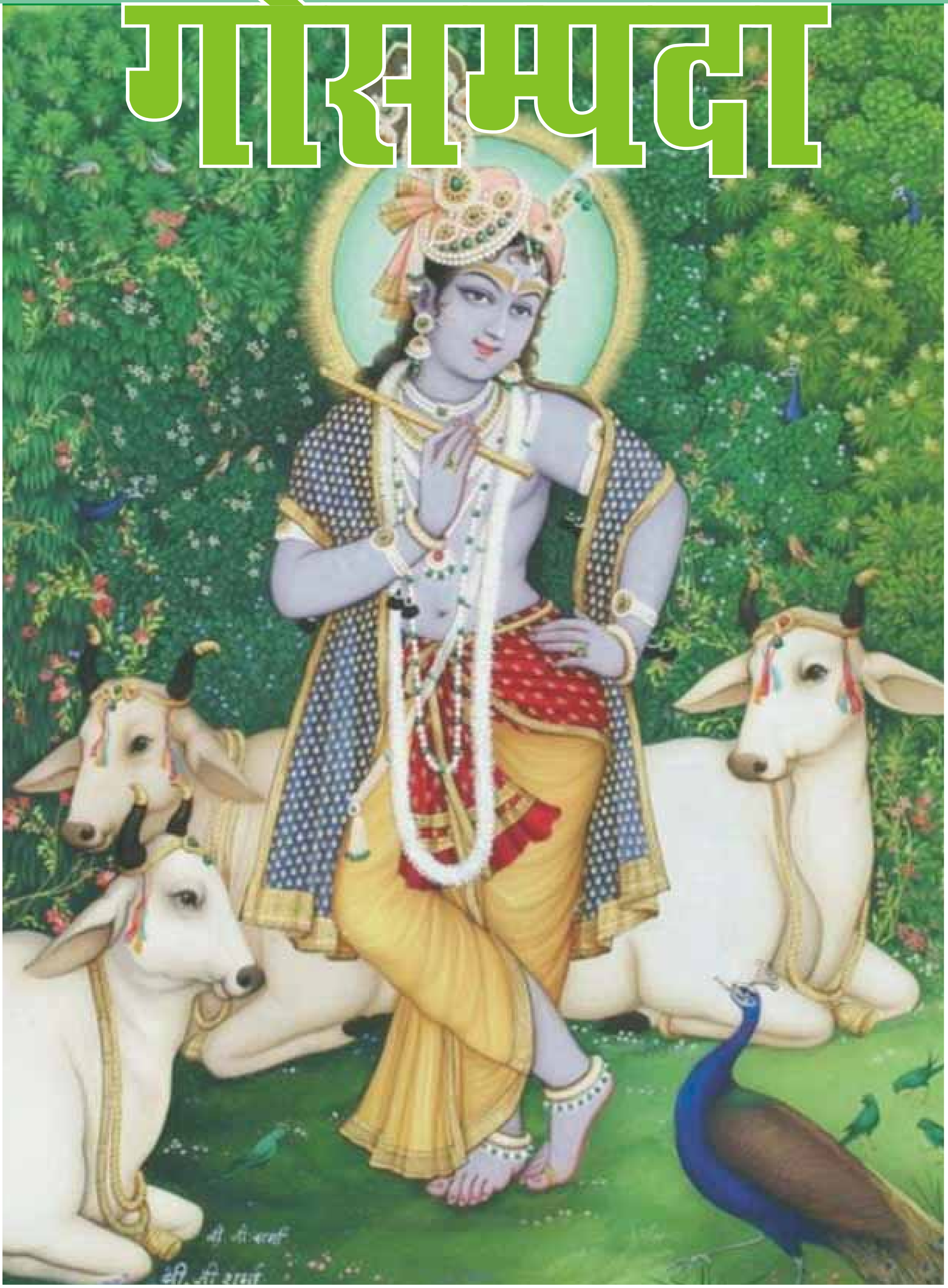

सम्पादकीय

गोमाता ही राष्ट्रमाता

सत्यतः गोरक्षा–गोसंवर्धन में ही राष्ट्र का विकास है, राष्ट्र का हित है, राष्ट्र की उन्नति–समृद्धि–सम्पन्नता है।

लेकिन आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है गाय कैसे बचे?यह समस्या विकराल रूप में सभी गाय प्रेमियों के समक्ष विद्यमान है। गोमाता के प्रति उपेक्षा का भाव रखने का ही दुष्परिणाम है कि लगभग सभी स्थानों पर नकली दूध, नकली दही, नकली घी के साथ ही अन्य नकली खाद्य पदार्थ बिक रहे हैं, जिसके कारण व्यक्ति का स्वास्थ्य तो प्रभावित हो ही रहा है साथ में वह भयंकर बीमारियों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए दुग्ध उत्पादन के लिए तो गोपालन होना ही चाहिए। उद्योगपतियों का भी यह कर्तव्य है कि वे अनुसंधान कर पंचगव्य पदार्थों से बनने वाली वस्तुएं अधिक–से–अधिक बनाएं। इससे बूढ़ी गाय, दूध न देने वाली गाय एवं बैल किसान के लिए बोझ नहीं बल्कि आर्थिक लाभदायक बनकर उसके परिवार का भी पालन–पोषण करेंगे।

दुर्भाग्य से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में जिन लोगों की गाय में श्रद्धा नहीं थी, ऐसे लोगों के हाथ में शासन आया। स्वयं पं. नेहरू राष्ट्रीय एकता के आड़े आ रहे हैं– यह विचार देश के जनमानस में पैदा होने लगा था। आज भी ऐसे ही लोगों के हाथ में शासन है। सब एक–से ही हैं, क्योंकि धर्म को निष्ठापूर्वक अंगीकार करने के लिए सत्यनिष्ठा चाहिए, त्याग की भावना चाहिए जो इन शासकों में नहीं है। इनसे क्या आशा की जा सकती है?

यह सुनकर हृदय दहल उठता है कि प्रातःकाल होने तक 50 से 60 हजार तक गोवंश काट दिया जाता है। इस देश की धरती जो गाय के गोबर और गोमूत्र से सिंचित होती थी, वह आज गाय के रक्त से रंजित हो रही है। क्या धरती छूने योग्य रह गई है?हजारों गायें रोज तस्करी के माध्यम से बंगलादेश एवं अन्य देशों को जा रही हैं। ये गायें रात के अंधेरे में सड़कों से उठा ली जाती हैं या किसानों से 200–400 रुपयों में खरीद ली जाती हैं।

बंगलादेश के कत्लखानों में कसाई प्रत्येक गाय या बैल के रक्त, मांस, हड्डियों, चमड़े आदि से 25 से 30 हजार रुपये तक कमाता है। किसान द्वारा 200–400 में बेची गई गाय बंगलादेश पहुंचकर तस्करों से 1500 से 2000 रुपये में विकने के पश्चात कसाई को 25000–30000 रुपये तक देती है। गोमाता कही जाने वाली इन गायों का कत्लखानों में जिस क्रूरता से वध होता है, उसकी कल्पना भी बड़ी भयानक है।

कितनी शर्मनाक स्थिति है कि गोभक्षक देश भारतीय गाय के दुग्ध उत्पादन एवं उपयोग को महत्व दे रहे हैं और गोपूजक देश में नये–नये कत्लखाने खोलकर गोवंश वध को अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा दिया जा रहा है।

वास्तव में गोमाता भारतवर्ष का सर्वश्रेष्ठ मानबिन्दु है, उसकी हत्या सभी के लिए लांछनास्पद व शर्मनाक है, वह बन्द होनी ही चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि राष्ट्रीयत्व का ढोंग रचने वाली कांग्रेस, उसके अध्यक्ष व उनके अनुसार चलने वाली सरकार हिन्दू एवं मुसलमान दोनों को अलग–अलग रखने का कार्य कर रही है।

गोरक्षा एवं गोसंवर्धन के लिए आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार एवं संस्थाओं द्वारा गौशालाओं तथा गोचर भूमि का निर्माण प्रत्येक गांव एवं नगर में किया जाए, जहां दूध न देने वाली गायों को रखा जा सके। इससे लाखों लोगों को रोजगार मिलेगा। इसके साथ ही बड़े–बड़े जंगल एवं पहाड़ आज भी हैं, जिनका गोचरण के लिए उपयोग किया जा सकता है।

यथार्थ में जब तक संपूर्ण भारत वर्ष में गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाएगा तब तक इस समस्या का समाधान संभव नहीं होगा। इसके अलावा मान बिन्दुओं की साम्राज्ञी गोमाता की रक्षा के लिए उसकी हत्या करने वाले को मानव–हत्या के समान दोषी मानकर दंड दिया जाना नितांत आवश्यक है, क्योंकि गाय के समान इस धरती पर दूसरा कोई ऐसा प्राणी नहीं है जो मानव जाति का पालन–पोषण करने के साथ ही कल्याण करने में सक्षम हो। इसलिए गोमाता को राष्ट्रमाता के सम्मान से सम्मानित कर उसकी रक्षा करना अनिवार्य है। ■

गोसम्पदा

वर्ष - 13

अंक - 01

नवम्बर - 2011

सम्पादक :
जय प्रकाश भारद्वाज

कार्यकारी सम्पादक :
देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
आर.के. पुरम, नई दिल्ली -22
मो. 9868559060
का. 011- 26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता :
श्री एम. आर. विरमानी

प्रकाशक :
निरोती लाल अग्रवाल
संकट मोचन आश्रम सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022
मो. : 09468681263

प्रचार-प्रसार प्रमुख :
मा. ठा. जयबहादुर सिंह शेखावत,
जयपुर एवं

श्री जगदीश जी अग्रवाल 'हरीओम'
अमरावती, मो. 09420721734

श्री खेमचन्द जी
राष्ट्रीय संगठन मंत्री एवं संरक्षक
मो. : 09910265221

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672
दूरभाष : 011- 26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

सहयोग राशि

एक प्रति	: रुपये	10/-
वार्षिक	: रुपये	100/-
आजीवन	: रुपये	1100/-

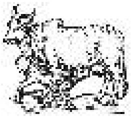

इस अंक में.......

जैविक खेती और प्राकृतिक ऊर्जा से खुशहाल होंगे गांव 2

गाय है मानव जाति के कल्याण का मंत्र..4

पंचगव्य से अरबों रुपये का व्यापार संभव..6

गाय और गुरुजी...8

अमृत तुलय हैं 'गोदधि, गोतक्र (छाछ) और मक्खन'.......................................10

समाचार श्रंखला...12

गाय से गांव और गांव से पर्यावरण की रक्षा...14

गौशाला प्रबन्धन, व्यवस्थापन एवं आर्थिक स्वावलम्बन 16

विश्व हिन्दू परिषद कार्यालय में गोपाष्टमी पर्व हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न..............19

गौशाला प्रतिनिधि सम्मेलन जयपुर में आयोजित 20

Smuggling Of Cattle Must Stop 22

गोरक्षार्थ त्यागमयी तत्परता...24

गोघृत एवं पंचगव्य मिलने का स्थान :

विहिप. केन्दीय कार्यालय :
संकट मोचन आश्रम, हनुमान मंदिर,
आर.के.पुरम, सैक्टर-6, नई दिल्ली,
फोन : 011-26178992

भाजपा कार्यालय :
अशोक रोड, नई दिल्ली
दूरभाष 23007500

श्री लवकेश गौड :
के-101, प्राचीन शिव मंदिर,
जी. टी. करनाल रोड,
इन्द्र धर्मकांटा, गुरुद्वारा नानक प्याऊ,
दिल्ली - 110033
मो. : 9891266534,
9015320057

जैविक खेती और प्राकृतिक ऊर्जा से खुशहाल होंगे गांव

– मा. कुप्.सी.सुदर्शन
निवर्तमान सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

30–35 साल के लोगों का कहीं रक्तचाप बढ़ रहा है तो किसी हो हृदय रोग हो रहा है। इसके लिए ज्यादातर को एंजियोप्लास्टी व बाइपास सर्जरी करानी पड़ रही है। इस सब का मूल कारण रोज अन्न-सब्जियों के साथ खाया जाने वाला रासायनिक जहर ही है। इसलिए रासायनिक खाद का प्रयोग बंद कर जैविक खाद का प्रयोग आरंभ करना जरूरी है।

खेती में रासायनिक खाद का प्रयोग बंद करना समय की मांग है, क्योंकि वह भूमि एवं मनुष्य दोनों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। रासायनिक खाद से उपजी चीजें खाने से साल भर में हम 100 मिलीग्राम तक रासायनिक जहर भोजन के साथ पचा जाते हैं। यही 100 मिलीग्रम जहर यदि एक साथ खा लें तो हम तत्काल दम तोड़ सकते हैं। थोड़ा–थोड़ा खाने के कारण हम तुरंत मरते तो नहीं हैं, लेकिन इसके घातक प्रभाव शरीर और मन पर होकर ही रहते हैं। आज अनेक प्रकार की बीमारियों की चपेट में गांव के मेहनतकश लोग भी आ रहे हैं। ऐसी बीमारियां जो पहले गांव में सुनने को नहीं मिलती थीं, अब शहरों के साथ हमारे ग्रामों में भी दिखने लगी हैं।

30–35 साल के लोगों का कहीं रक्तचाप बढ़ रहा है तो किसी हो हृदय रोग हो रहा है। इसके लिए ज्यादातर को एंजियोप्लास्टी व बाइपास सर्जरी करानी पड़ रही है। इस सब का मूल कारण रोज अन्न–सब्जियों के साथ खाया जाने

लकड़ी काटने से जंगल कम हो रहे हैं। हमने ऊर्जा के लिए बेतहाशा जंगल काटे हैं। अपने पास यदि केवल एक गाय और एक जोड़ी बैल है तो उस एक गाय और बैल की जोड़ी के गोबर से गोबर गैस संयंत्र चल सकता है।

वाला रासायनिक जहर ही है। इसलिए रासायनिक खाद का प्रयोग बंद कर जैविक खाद का प्रयोग आरंभ करना जरुरी है। जैविक खाद बनाने के तत्काल बाद उसका प्रयोग करना ठीक नहीं होता। जो जमीन रासायनिक खाद के उपयोग से बर्बाद हुई है, उसको ठीक करने में तीन साल का समय तो लगता ही है। किसान भाई पहले साल 25 प्रतिशत जैविक खाद और 75 प्रतिशत रासायनिक खाद का प्रयोग करें, दूसरे साल 50–50 और तीसरे साल 25–75 के अनुपात में और चौथे साल पूरा का पूरा जैविक खाद प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रक्रिया के पालन से चार साल में भूमि जहरीले रसायनों के प्रभाव से मुक्त हो जाएगी।

प्राकृतिक खेती :

आजकल खेती की एक और नई पद्धति निकली है। वह है प्राकृतिक खेती। जंगलों में कोई खाद नहीं डालता। जंगलों में कोई कीटनाशक भी नहीं होता। लेकिन जंगलों में जो मिट्टी बनती है वह प्राकृतिक पद्धति से तैयार होती है। वहां जमीन के ऊपर पेड़, टहनियां, पेड़ों की छालें और पशु–पक्षियों के मल–मूत्र का विसर्जन होता रहता है। उससे असंख्य जीवाणु पैदा होते हैं और उन सबके परिणामस्वरूप अंत में बढ़िया खाद तैयार हो जाती है। इस प्रक्रिया को ठीक से समझ कर 100 दिन के अंदर भी खाद तैयार की जा सकती है। इस पद्धति से हमने यदि जमीन तैयार कर ली तो केवल 10,000 वर्ग फुट के क्षेत्र वाला किसान भी पांच लोगों का परिवार आसानी से पाल सकता है। अनाज, सब्जी, औषधि आदि सारी चीजें प्राप्त करते हुए 15 हजार रुपए प्रतिवर्ष तक बचत भी कर सकता है। इसमें एक बार ही मेहनत करनी है।

ऊर्जा निर्माण :

दूसरी बात यह है कि लकड़ी काटने से जंगल कम हो रहे हैं। हमने ऊर्जा के लिए बेतहाशा जंगल काटे हैं। अपने पास यदि केवल एक गाय और एक जोड़ी बैल है तो उस एक गाय और बैल की जोड़ी के गोबर से गोबर गैस संयंत्र चल सकता है। आज ऐसी विधि उपलब्ध है जिसके आधार पर गोबर गैस से घर के अंदर ईंधन की समस्या हल हो सकती है तथा छोटे सी..एफ.एल बल्ब भी जलाए जा सकते हैं।

इसी प्रकार सौर ऊर्जा भी बहुत उपयोगी है। इस संबंध में भी बहुत दिनों से प्रयोग चल रहे हैं। सौर ऊर्जा में प्रायः देखा जाता है कि दिन में बादल छा जाएं या फिर रात हो तो ये काम नहीं करती, लेकिन अब उसके अंदर सेल तकनीकी जोड़ दी गई है। इससे अब 24 घंटे ऊर्जा उपलब्ध रहती है। इसके प्रयोग से छोटे–बड़े घर, दूकान–प्रतिष्ठान रोशन होने लगे हैं। आवश्यकतानुसार 500 वॉट से लेकर 100 किलोवाट तक सौर ऊर्जा पैदा की जा सकती है। इसमें बिजली की आवश्यकता नहीं रहती है। खम्भे भी नहीं डालने पड़ते। इस प्रकार प्राकृतिक ऊर्जा का उपयोग भी ठीक प्रकार से हो सकता है।

गाय है मानव जाति के कल्याण का मंत्र

– इंद्रेश कुमार

सदस्य अ. भा. कार्यकारी मण्डल, रा.स्व.संघ

मानव मात्र के कल्याण में गाय न तो भाषा-भेद करती है, न जाति-भेद करती है, न प्रांत-भेद करती है, न पंथ-भेद करती है और न ही भूगोल का भेद करती है। यही कारण है कि अनेक महापुरुषों ने तो गाय की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने में भी संकोच नहीं किया।

विश्व के अन्दर जितने भी प्रकार के खाद्यान्न हैं उनमें दूध को पूर्ण आहार माना गया हैं। दूध हमें मुख्यतः गाय एवं भैंस से प्राप्त होता है। कहीं–कहीं बकरी के दूध और ऊँटनी के दूध की चर्चा होती है। परन्तु विश्व के लगभग 200 देशों और लगभग 700 करोड़ जनसंख्या पर यदि दृष्टि डालें तो उनके लिए प्रयोग में लाए जाने वाले दूध का अधिकांश गाय से ही प्राप्त होता है। इसी कारण विश्व में पशुधन के रूप में सर्वाधिक गाय ही है। चाहे ठण्डे प्रदेश में जाइए अथवा गर्म में, जंगल में जाइए या पहाड़ पर, चाहे गाँव में देखिए या शहर में, सर्वत्र गाय ही मिलेगी। गाय को हम कुछ भी खिलाएं, चाहे जैसे भी रखें, बदले में वह हमें जो चीजें देती है, वह अद्भूत हैं। गाय हमें दूध देती है जो पूर्ण आहार है। गाय जो गोबर देती है, वह पूर्ण ऊर्जा है। वह जो गोमूत्र देती है, वह पूर्ण औषधि है और वह जुगाली करते समय जो गैस छोड़ती है वह पूर्ण प्राण वायु है। गो दूध से निर्मित होने वाले दूध और दही का मोल सब जानते हैं। पर इस बात से कम ही लोग परिचित हैं कि गाय अपना भोजन पचाने के लिए जो जुगाली करती है, उस बीच जो

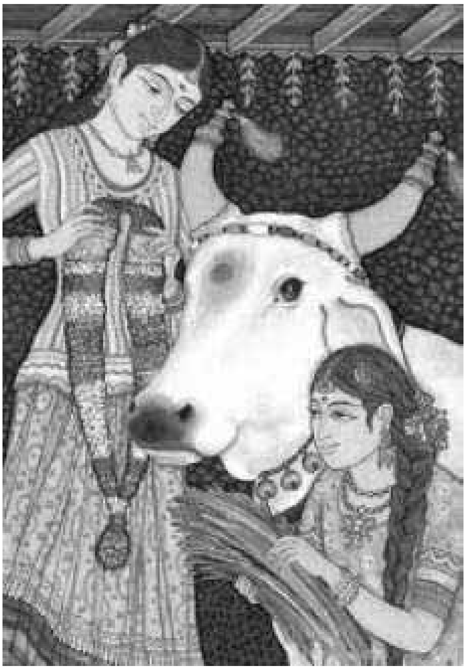

वायु निकलती है उसमें आक्सीजन की भरपूर मात्रा होती है। एक विशिष्टता और भी है कि गाय के अंगों को सहलाने से व्यक्ति को अनेक व्याधियों से भी मुक्ति मिलती है। गाय की गर्दन को सहलाने से व्यक्ति का रक्तचाप नियंत्रित होता है। गाय को प्रेमपूर्वक सहलाने से जोड़ों का दर्द कम होता है और मानसिक तनाव में कमी आती है। इसलिए गाय के परिवेश में जो रहेगा उसे हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा, हानि कुछ नहीं होगी। इसलिए यदि परिभाषित रूप से कहें तो गाय मानव मात्र के कल्याण के लिए ईश्वर द्वारा भेजा गया एक प्राणी है। मानव मात्र के कल्याण में गाय न तो भाषा–भेद करती है, न जाति–भेद करती है, न प्रांत–भेद करती है, न पंथ–भेद करती है और न ही भूगोल का भेद करती है। यही कारण है कि अनेक महापुरुषों ने तो गाय की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने में भी संकोच नहीं किया। इस्लाम के अंतिम रसूल मोहम्मद साहब ने भी बहुत स्पष्ट शब्दों में गाय के दूध को अमृत बताया था। यह भी कहा कि इसका दूध मुफीद है, जबकि उसका मांस खाना बीमारी है, नुकसानदायक है। कहते हैं कि ईसा मसीह का बाल्यकाल भी उस कमरे में बीता जहाँ गाय बाँधी जाती थी। लोक कथाओं में इसीलिए कहा जाता है कि इसी कारण से उनका शरीर बहुत स्वस्थ और रोग मुक्त था। सिख, बौद्ध और जैन पंथों

का इतिहास देखें तो उनमें भी गाय की महिमा का वर्णन है। गोरक्षा के लिए बलिदान देने और गाय की सेवा करने के अनेक निर्देश और प्रसंग मिल जाएंगे।

हम जानते हैं कि बहुत सारी बीमारियाँ ऐसी हैं जो पशुओं में से होकर मनुष्य तक पहुंचती हैं अर्थात् यदि किसी पशु ने कोई जहरीला पदार्थ खा लिया और उस पशु का मांस किसी मनुष्य ने खा लिया तो वह रोग उस तक पहुंच जाता है। परन्तु गाय ऐसी दुर्लभ प्राणी है जो प्रथमतः तो कोई अवशिष्ट खाती नहीं और यदि खा भी ले तो उसका जहरीला तत्व वह खुद में समेट लेती है और बदले में शुद्ध और पौष्टिक दूध देती है। इसके बावजूद कुछ तो यूरोप की देन है, और कुछ कट्टरपंथी साम्राज्यों ने गाय का वध करना और उसके मांस का भक्षण करने का कार्य प्रारंभ किया। इससे अधिक अलोकतांत्रिक, अमानवीय, आपराधिक अधर्म और कोई दूसरा नहीं है। यह बात सही है कि विश्व की 7 अरब जनसंख्या में से लगभग एक अरब हिन्दू व अन्य भारतीय मत–पंथ को मानने वाले समुदाय गाय को माता मानते हैं। यह बात भी समझ में आ सकती है कि जहाँ माता की अवधारणा स्पष्ट नहीं है वे देश और वहाँ के लोग माता का फर्ज भी नहीं समझते होंगे। जब वह अपने को जन्म देने वाली माता स्वरूपा नारी का सम्मान नहीं करते, उसे भोग्या मानते हैं तो वे मानव जाति का कल्याण करने वाले एक पशु अर्थात् गाय को माता मानकर उसकी रक्षा करने के लिए कैसे सोच सकते हैं?

भारतीय संस्कृति में तो जो मानव जाति का कल्याण करे उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की अनूठी परम्परा है। इसलिए वह वातावरण को शुद्ध करने वाली तुलसी को माता कहता है, गंगा, नर्मदा, आदि नदियों को माता कहता है, गायत्री मंत्र पढ़ने से मन–बुद्धि शांत होती है, इसलिए गायत्री माता कहता है। ये भारतीय संस्कृति, हिन्दू संस्कृति या फिर कहें तो मानवीय संस्कृति के प्रतीक हैं। गाय, गंगा, गीता, गायत्री और तुलसी–ये किसी पंथ या मजहब के प्रतीक नहीं हैं। ये सब मानव मात्र के कल्याण के लिए हैं। इन्हें जाति, पंथ और भाषा के दायरे में नहीं बाँधा जा सकता जो लोग ऐसा करते हैं वे संकुचित और साम्प्रदायिक हैं। विदेशी आक्रमण और विदेशी आक्रांताओं के द्वारा संस्कृति और सांस्कृतिक जीवन मूल्यों पर किए गए प्रहार ने इन प्रतीकों पर आघात करने का दुर्भाग्यपूर्ण चलन प्रारम्भ किया। इस अमानवीय कृत्य को करते रहने के लिए कहीं इसे मजहबी कार्य बताया गया तो कहीं इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आवरण से ढंका गया। परन्तु आज 21वी सदी में लोग इस अमानवीय और आपराधिक कृत्य से दूर हट रहे हैं। यह विचार सामने आ रहा है कि गाय को किसी मजहब या पंथ से न जोड़कर उसको सांस्कृतिक, आर्थिक और विकास की दृष्टि से देखना चाहिए। गोवंश उत्पाद पर आधारित जो उद्योग एवं औषधीय क्षेत्र में जो उनका प्रयोग हो रहा है उसके कारण से गोवंश की रक्षा और महत्ता स्थापित हो रही है।

गाय आर्थिक दृष्टि से कितनी महत्त्वपूर्ण है, यह उसके गोमय और गोमूत्र से बनने वाले उत्पादों ने सिद्ध कर दिया है। आज देश में अनेक स्थानों पर हो रहे सफल प्रयोग गोवंश की महत्ता को पुनः स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यदि विश्व को प्रदूषण मुक्त रखना है और आम आदमी की गरीबी दूर कर उसे आर्थिक समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ाना है तो गोवंश का संरक्षण हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इसलिए एक बार पूरे विश्व को, विशेषकर भारत को, भारत की सरकार को, राज्य सरकारों को, सामाजिक संगठनों को और बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वे गोवंश के संरक्षण की योजनाएं बनाएं, उन्हें क्रियान्वित करें। यदि ऐसा होगा तो गोवंश देश की आर्थिक समृद्धि में तो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा ही, समाज में भी सुसंस्कारों की वृद्धि होगी।

– **वार्ताआधारित**

पंचगव्य से अरबों रुपये का व्यापार संभव

– मुलख राज विरमानी

हमारी आयुर्वेदिक दवाइयों के दिग्गज निर्माता जैसे वैद्यनाथ, डाबर और हिमालय अगर पंचगव्य की दवाइयों की उपयोगिता पर अनुसंधान करें और बनायें भी तो इस देश के लोगों के असाध्य रोगों का निदान हो जाये और गोपालकों का अमृत तुल्य-दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोमय भी अच्छे दामों में बिक कर गाय की रक्षा और किसान के परिवार का लालन-पालन एक सुन्दर ढंग से हो जाये।

आज तक गाय को बचाने के हमारे सारे प्रयास विफल हुए हैं। इस कटु सत्य को स्वीकारते हुए हम सोचें तो हमारे पास एक ही विकल्प बचा है कि हम संयुक्त रूप से गाय की उपयोगिता को शिखर पर ले जायें, जिससे वह स्वावलम्बी होकर अपना पेट भरने के साथ ही किसान या कोई अन्य गो सेवक के परिवार का भी भली–भांती पालन कर सके।

पंचगव्य से औषधियाँ व अन्य उद्योग :

इस देश में रहने वाले 80 प्रतिशत लोग गाय को 'माँ' की संज्ञा देते हैं। बड़ी प्रसन्नता की बात तो यह है कि प्रवासी भारतीय गाय को इससे भी अधिक सम्मान देते हैं। इस विचार का लाभ लेते हुए हम निश्चय करें कि जो वस्तुएं गाय के पंचगव्य से बनती हैं हम उन्हीं का प्रयोग करें और हर उत्सव पर उपहार के रूप में उन्हीं का लेन–देन करें। इस बारे में गाय की सेवा करने वाली कई संस्थाओं ने जो अनुमान लगाये हैं, उनके अनुसार गाय के पंचगव्य से अरबों रुपये का सामान बन सकता है और जैसी हमारी गाय के प्रति अगाध श्रद्धा है उससे हाथों–हाथ बिक भी सकता है। कानपुर गौशाला सोसायटी पंचगव्य से करोड़ों रुपये का सामान बनाती है। उसके महामंत्री श्री पुरुषोत्तम लाल जी तोषणीवाल ने बताया कि बिना किसी विज्ञापन के उनका सारा सामान केवल बिकता ही नहीं अपितु उसकी मांग को पूरा करने में भरसक प्रयत्न करने पर भी कठिनाइयाँ आती हैं। हमारी आयुर्वेदिक दवाइयों के दिग्गज निर्माता जैसे वैद्यनाथ, डाबर और हिमालय अगर पंचगव्य की दवाइयों की उपयोगिता पर अनुसंधान करें और बनायें भी तो इस देश के लोगों के असाध्य रोगों का निदान हो जाये और गोपालकों का अमृत तुल्य–दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोमय भी अच्छे दामों में बिक कर गाय की रक्षा और किसान के परिवार का लालन–पालन एक सुन्दर ढंग से हो जाये। इस विचारधारा को बल देते हुए और सम्भव बनाने के लिए हमारे गौभक्त उद्योगपति भी आगे आयें। वह बड़े धड़ल्ले से पंचगव्य–आधारित उद्योग लगायें, उनकी उपयोगिता का प्रचार–प्रसार करें ताकि लोगों की इन वस्तुओं के प्रयोग में रुचि बढ़े।

इस समय विभिन्न संस्थाएं जो पंचगव्य से दवाइयों और अन्य वस्तुएं बना रही हैं वह अपने ढंग से अनुसंधान भी करें। इस अनुसंधान क्षेत्र में उद्योगपतियों के खुले दिल से आने से इसकी गति में बहुत प्रगति होनी निश्चित है। पंचगव्य की वस्तुओं के विक्रेता बहुत कम हैं। इनकी संख्या भी सुचारु रूप से और

बढ़ाने की आवश्यकता है। इस समय भी पंचगव्य से बहुत वस्तुएं बन रही हैं। दवाइयों की गिनती तो अनगिनत है। कई निजी उद्योग वाले वैद्य असाध्य रोगों के निदान के लिए पंचगव्य का सहारा लेकर औषधियां बनाकर और बेचकर अपार धन कमा रहे हैं, परन्तु अनुसंधान कर इसकी उपयोगिता दूसरे वैद्यों को बताने की बहुत अधिक आवश्यकता है। जैसे – घनवटी की उपयोगिता लीवर, डायबिटीज, उदर रोग, श्वास और बवासीर जैसे रोगों के निदान के लिए लाभदायक है। यह रक्तशोधक और उदर के कीड़ों का भी नाश करती है। ऐसे ही वात रोग, गठिया और जोड़ों के दर्द के लिए पंचगव्य से कई प्रकार के तेल बहुत ही लाभकारी हैं। औषधियों की लम्बी पंचगव्य –आधारित दवाइयों में कैंसर तक को ठीक करने की औषधियां बन चुकी हैं और इस पर निरन्तर अनुसंधान भी किया जा रहा है।

पंचगव्य से घरेलू वस्तुएं :

घर–घर में प्रयोग होने वाली अनेक वस्तुएं पंचगव्य से बनी हैं जो बहुत लाभदायक हैं। जैसे विभिन्न प्रकार का नहाने का साबुन, दांत व मसूड़ों के रोगों का निदान करने वाला पाउडर, बालों को चमकीला तथा रेशम–सा बनाने वाला शैम्पू, और फिनाइल जैसी घर–घर में प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का अरबों रुपये का व्यापार सम्भव है। जब हम अरबों रुपयों की बात करते हैं तो घर–घर में प्रयोग में आने वाला वाश्बेसिन और संडास आदि की सफाई करने वाला पाउडर, हाथ धोने का जलवत साबुन, कपड़े में सफेदी लाने वाला पाउडर, कीटाणु रोधक, आफ्टर शेव लोशन, मच्छर भगाने के लिये (रसायन विहीन) क्वाइल, बर्तन साफ करने का पाउडर इत्यादि वस्तुएं हैं जो इस समय बन रही हैं। इस लम्बी गिनती में कृषि उपयोगी और पशु उपयोगी औषधियां भी हैं।

संतों से सहयोग देने का आग्रह :

इस सारे कार्य को सम्पन्न करने के लिए उद्योगपतियों के साथ–साथ हमारी सन्तों से करबद्ध प्रार्थना है कि वे इस विचार को सफल बनाने के लिए सहयोग दें। युगों–युगों से हमारा पूजनीय सन्त–समाज लोगों की सांस्कृतिक, मानसिक और धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता आ रहा है। हरि कृपा से उनकी वाणी से निकला हर शब्द लोगों के लिए और विशेषकर उद्योगपतियों, विक्रेताओं और अन्य व्यापारियों के लिए एक आदेश का काम करता है। इसलिए गाय के लिए इस महान विपत्ति काल में यदि सन्त उद्योगपतियों को पंचगव्य से बनने वाली वस्तुओं के काम में आने के लिए कहें तो गाय, किसान और देश का महान भला हो सकता है। उद्योगपति, विशेषकर मुम्बई और कोलकाता में रहने वाले और यहाँ के व्यापारी इस दिशा में अहम् भूमिका निभा सकते हैं।

विदेशों में रहने वाले भारतीय तो भारत की संस्कृति के प्रति पूर्ण समर्पित हैं। वह विशेषकर रसायनों से बने पदार्थों का बहिष्कार करना चाहते हैं क्योंकि ये वस्तुएं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। इन वस्तुओं के प्रयोग के कारण नये–नये रोग लोगों को ग्रस्त कर रहे हैं।

यह शत–प्रतिशत सत्य है कि भारत के उद्योगपति–व्यापारी और नागरिक भारतीय 'गाय' से प्यार करते हैं और उसको 'माँ' की संज्ञा भी देते हैं। अगर उद्योगपति पंचगव्य सम्बन्धी उद्योग लगायें और उनके विभिन्न प्रकार के रोगों के निदान के लिए दवाइयाँ और घर में प्रयोग में आने वाली अनेक वस्तुएं बनायें और व्यापारी इनको पूरी लगन से बेचें और जनता इनका व्यापक रूप से प्रयोग करे तो गाय बचेगी, देश समृद्ध होगा, लोग रोगमुक्त होंगे और देश को अरबों रुपये का लाभ भी होगा।

संपर्क : ए–22, गुलमोहर पार्क
नई दिल्ली – 110049

गाय और गुरुजी

गोहत्या-निरोध आवश्यक

दिल्ली में अक्टूबर 1952 में गोहत्या–निरोध आंदोलन के विषय में पत्रकारों से चर्चा करने के दौरान परम पूजनीय श्री गुरुजी द्वारा अभिव्यक्त किये गये दिव्य विचार अधोलिखित हैं –

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा गोहत्या के विरोध में चलाए जा रहे अभियान का उद्देश्य जनजागरण करना, संपूर्ण देश के वयस्क व्यक्तियों के हस्ताक्षरों के रूप में जनमत को अभिव्यक्त करना और दुधारू या ठेठ बूढ़ी या बाछी गोहत्या पर देशव्यापी प्रतिबंध के लिए सरकार से आग्रह करना है।

पशुओं की सुरक्षा की आवश्यकता का पहला कारण तो यह है कि अपना देश मुख्यतः कृषिप्रधान है और यहां सामूहिक या विशाल पैमाने पर जोत की प्रथा नहीं है। आचार्य विनोबा भावे का मत है कि छोटे भूखंडों (जैसे 5 एकड़) के वितरण से सभी को और विशेषतः बेरोजगारों को रोजगार देने से बेरोजगारी की समस्या हल हो सकती है। इन सब पहलुओं को देखते हुए इस देश में यंत्रों द्वारा खेती बहुत सफल होने की संभावना नहीं है। इसलिये खेती के विभिन्न कामों के लिए पशुओं की बड़े पैमाने पर आवश्यकता है। खाद की पूर्ति भी एक पहलू है, किंतु वह तभी सुलभ हो सकती है जब आज कल बड़े पैमाने पर होने वाला गोधन का भीषण संहार रोका जाय।

गाय के प्रति जनसाधारण की अनन्य श्रद्धा है और यही बात मुझे सबसे अधिक जचती है। जनश्रद्धा के विषयों की आज जिस प्रकार से अवहेलना हो रही है, वह दुःखदायक है। लोगों को राष्ट्रीय चेतना से उत्स्फूर्त करना तभी संभव होगा जब प्राचीन परंपरागत श्रद्धाओं का लोगों में पुनर्जागरण किया जाएगा। इस दृष्टि से सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण एक प्रशंसनीय उदाहरण है, क्योंकि उसका लक्ष्य था पराजय और दासता की भावना को समूल नष्ट करना। गो–रक्षा से भी वही लक्ष्य साध्य होगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अन्य दलों के समान कोई दल नहीं है, फिर भी वह इस अभियान का प्रारंभ कर रहा है, क्योंकि किसी–न–किसी को आगे आना चाहिए। यह अभियान किसी दल की ओर से प्रारंभ नहीं किया गया। इसलिए यह आशा है कि सभी दल इस अभियान

में सहयोग देंगे।

गोहत्या के विरुद्ध इस अभियान के विषय में संभाव्य आक्षेपों से मैं अवगत हूँ। उदाहरणार्थ कोई यह कह सकता है कि बूढ़े पशु बोझ हैं, इसलिए उनकी हत्या होनी ही चाहिए, किंतु यह सत्य नहीं है। इसके विपरीत मैं समझता हूं कि यदि वृद्ध और निरुपयोगी गाय–बैलों की सही देखभाल की जाए तो उससे जो लाभ होगा, वह उन पर किए जाने वाले खर्च से कहीं अधिक होगा।

इसी प्रकार विदेशी मुद्रा का भी प्रश्न उठ सकता है, किंतु इसे अनावश्यक महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। विशेषतः ऐसे प्रश्न पर, जिस पर संपूर्ण समाज श्रद्धा रखता हो, उसकी तुलना में विदेशी मुद्रा का विचार महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। यह स्पष्ट दिखाई देते हुए भी कि नशाबंदी से भारी वित्तीय हानि होगी, सत्तारूढ़ दल ने इसे चुनाव का विषय बनाया है और वित्तीय हानि की पूर्ति अन्य मार्गों से करने का प्रयास किया है। मेरा निश्चित मत है कि यही बात गोहत्या के संदर्भ में भी अपनाकर विदेशी मुद्रा और चर्म–व्यवसाय में होने वाले नुकसान की भरपाई की जा सकती है।

इस आक्षेप का भी कोई अर्थ नहीं है कि गोहत्या बंद कर देने से गोहत्या पर आजीविका चलाने वाले बेरोजगार हो जाएंगे। उन्हें दृढ़ता से कहा जा सकता है कि कोई अन्य अच्छा–सा व्यवसाय ढूंढ़ लें। हथकरघे का पुश्तैनी व्यवसाय करने वाले चेन्नै के बुनकरों से केंद्रीय मंत्री श्री टी.टी. कृष्णमाचारी यदि यह कह सकते हैं कि उन्हें सूत नहीं मिलता तो अन्य कोई व्यवसाय ढूंढ़ लें, तो फिर यही बात कसाइयों से क्यों नहीं कही जा सकती?

अपने संविधान की धारा 48 के अनुसार दुधारू हों या शुष्क सभी पशुओं की रक्षा आवश्यक है, किंतु शासन ने अभी तक इस संबंध में कुछ नहीं किया है। इसलिये सरकार को उसके कर्तव्य का स्मरण कराने के लिए संघ ने यह अभियान प्रारंभ किया है।

26 अक्टूबर को गोपाष्टमी होने के कारण उस दिन से यह अभियान शुरू होगा। गोपाष्टमी महोत्सव भगवान श्रीकृष्ण और उनके ग्वालबालों की स्मृति में संपूर्ण देश में मनाया जाता है। 26 अक्टूबर से न केवल संघ के स्वयंसेवक ही, अपितु इस अभियान में सहयोग देने की इच्छा रखने वाले अन्य लोग भी घर–घर जाकर हस्ताक्षर–संग्रह करेंगे। यह अभियान एक माह तक चलेगा और अंत में हस्ताक्षरों का यह संग्रह भारत के राष्ट्रपति को समर्पित किया जाएगा। यद्यपि अभी अंतिम रूप से निश्चित नहीं हुआ है, फिर भी 7 दिसंबर को हस्ताक्षरों का संग्रह राष्ट्रपति को समर्पित करने का विचार है। हस्ताक्षर संग्रह का समर्पण एक प्रतिनिधि मंडल द्वारा किया जाएगा।

शासन यदि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रस्तावों को स्वीकार नहीं करता है तो संघ सभी संवैधानिक उपायों का अवलंबन कर अगली कार्रवाई करेगा। जहाँ तक सत्याग्रह का प्रश्न है, यदा–कदा होने वाले सत्याग्रह अपने देश के योग्य विकास की दृष्टि से बहुत उपयोगी नहीं हैं। सत्याग्रह एक अस्त्र है और अन्य सभी अस्त्र विफल हो जाने के बाद ही उसका उपयोग करना चाहिए।

ऐतिहासिक दृष्टि से गाय के प्रति श्रद्धा का उल्लेख उतना ही प्राचीन है जितना कि वेद प्राचीन है।

प्रस्तुति – देवेन्द्र नायक

अमृत तुल्य हैं 'गोदधि, गोतक्र (छाछ) और मक्खन'

- वैद्या सौ. नंदिनी भोजराज, एम.डी. (आयुर्वेद)

मक्खन निकाल लेने के बाद बचा हुआ द्रव याने छाछ या तक्र को तो पृथ्वीतल का अमृत कहा गया है। आधुनिक शास्त्रों के अनुसार छाछ में रहने वाला 'लैक्टिक एसिड' बुढ़ापे को दूर करने वाली ताकत कहा गया है। अतः वयस्क व्यक्तिओं के भोजन में एक कटोरी भर छाछ होता है, जिससे खाया गया अन्न अच्छी तरह पच जाता है।

देशी, स्वस्थ (निरोगी) गाय का शुद्ध (मिलावट रहित) दूध लेकर उसे अच्छी तरह गरम करने (उबालने) के बाद ठंडा होने पर उसमें जामुन (खटाई) डालकर ठंड के दिनों में लगभग आठ घंटे और गर्मी के दिनों में चार–पांच घंटों तक जमने दिया जाये। यह तैयार हुआ गोदधि पचने में थोड़ा भारी होता है। इसकी स्निग्धता और अन्य गुणों के कारण शरीर पर वातनाशक के रूप में परंतु पित्त एवं कफ को बढ़ाने का असर पड़ता है। गाय के दूध से बने दही से भूख बढ़ती है। दही खाने से मल–मूत्र की निकासी अछे ढंग से होती है। ताजे दही का सेवन ही स्वास्थ्य के लिए उत्तम होता है, परंतु दही का अभिष्यंदी गुण (शरीर के अंदर खून के संचालन में अवरोध उत्पन्न करने वाला गुण) शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अहितकारी है। इसीलिए दही का सेवन रात्रि में कभी नहीं करना चाहिए। निरोगी व्यक्ति के लिए तो दही रुचिकर होता है, फिर भी व्यक्तिशः प्रकृति के अनुसार ही दही का नित्य सेवन किया जाना चाहिए। गोदधि में निम्न गुण होते हैं–

यह मन्द संज्ञक (अच्छी तरह न जमा हुआ) होने के कारण दाह कारक होता है, अतः बीमार व्यक्ति को पूछ–परख के बाद ही दही खाना चाहिए।

ऋषि–मुनियों का कहना है कि शक्कर के साथ खाया जाने वाला दही सर्वोत्तम होता है।

इसी तरह प्रतिदिन अधिक प्रमाण में दही खाने से मधुमेह हो जाने का अंदेशा होता है। यह भले ही कारण हो, फिर भी स्वस्थ व्यक्ति के लिए दही वीर्य–वर्धक, वृष्य एवं तृप्ति देने वाला होता है।

जिन्हें भोजन में रुचि न आती हो या जिन्हें पतले दस्त की तकलीफ हो या दुर्बलता महसूस होती हो, उन्हें दिन में दही खाना चाहिए।

ऋतुओं का विचार किया जाय तो शिशिर (दिसंबर–जनवरी) और वर्षा ऋतु (जुलाई–अगस्त) में स्वस्थ व्यक्ति को दही खाना चाहिए। किन्तु शरद, ग्रीष्म (अप्रैल, मई) तथा वसंत ऋतुओं (फरवरी, मार्च) में दही का सेवन किसी के लिए भी हितकारक नहीं है। वसन्त ऋतु में तो कफ की शिकायत का समय होता है, अतः इस ऋतु में दही खाने से कफ और भी बढ़ता है और कफ विकार बढ़ते हैं।

मलाई सहित, बिना पानी डाले मथा (बिलोआ) हुआ दही, मलाई हटा देने के बाद मथा हुआ दही, इन सबके अलग–अलग गुण व विशेषताएँ बताई गई हैं। आयुर्वेद व अन्य शास्त्रों में इनका अच्छा विश्लेषणात्मक वर्णन किया गया है।

तक्र या छाछ यानी दही में पानी डालकर मथा या बिलोआ हुआ मिश्रण। इसमें मलाई युक्त और मलाई रहित छाछ–एक रूखा तथा दूसरा स्निग्ध होता है। छाछ तैयार करने के बाद निकलता है–मक्खन या नवनीत।

माखन–प्रिय कृष्ण–कन्हैया से कौन परिचित नहीं है। परन्तु युवक कृष्ण को माखन खाते किसी ने देखा है?गाय का ताजा माखन खाने से दुबले–पतले बालक भी अच्छे हृष्ट–पुष्ट और बलवान युवक बन सकते हैं। माखन (मक्खन) धातुओं का पोषण कर उन्हें पुष्ट करने वाला और उसे वृद्धिगत करने वाला होता है। यह बुद्धि वर्धक भी है। संभवतः इसीलिए बाल–कृष्ण लीला में बालकों को मक्खन खाने का संदेश दिया गया है।

जिन्हें बवासीर (पाइल्स) की तकलीफ हो, उन्हें, नाग–केशर चूर्ण शक्कर मिश्रित मक्खन में मिलाकर दिया जाय तो खून बहना बंद हो जाता है। यह प्रत्यक्ष प्रमाणित अनुभव है। जिन्हें भूख न लगती हो उन्हें अग्नि प्रज्वलित करने वाला मक्खन

खाना चाहिए। वजन बढ़ाने की इच्छा हो तो 30 ग्रम गाय का ताजा मक्खन, एक ग्राम खड़ी शक्कर पन्द्रह दिन तक लें तो एक किलो वजन बढ़ जाता है। बालकों के ऐसे अनेक उदाहरण हैं। सूखी–खांसी यदि ठीक न हो तो 100 ग्राम मक्खन को थोड़ा गर्म याने द्रव रूप में लाकर उसमें 6 ग्राम खड़ी शक्कर और 3 ग्राम शहद मिलाकर सेवन करने पर खांसी ठीक होती है। इतना ही नहीं बल्कि खांसी बंद होते ही शरीर में ताकत बढ़ने का एहसास होता है। बुद्धि पर जोर देकर काम करने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों, ग्रंथकारों को उपरोक्त प्रकार का मक्खन अवश्य खाना चाहिए, इससे लाभ होगा। लेकिन मक्खन हमेशा ताजा हो।

मक्खन निकाल लेने के बाद बचा हुआ द्रव याने छाछ या तक्र को तो पृथ्वीतल का अमृत कहा गया है। आधुनिक शास्त्रों के अनुसार छाछ में रहने वाला 'लैक्टिक एसिड' बुढ़ापे को दूर करने वाली ताकत कहा गया है। अतः वयस्क व्यक्तिओं के भोजन में एक कटोरी भर छाछ होता है, जिससे खाया गया अन्न अच्छी तरह पच जाता है।

छाछ बनाते समय दही में कितने प्रमाण में पानी डाला जाता है, उसके अनुसार छाछ का वर्गीकरण किया जाता है। जैसे छाछ उदश्वित, 'छच्छिका' आदि। जितना दही हो उसके आधा प्रमाण में पानी मिलाकर बना छाछ पाचन के लिए अच्छी औषधि है। पतली दस्त होती हो तो इस छाछ से दस्त रुकती है। बवासीर (पाइल्स) की शिकायत भी हो तो प्रतिदिन एक कटोरी छाछ पीने से तकलीफ कम होती है। प्लीहा (स्प्लीन) के रोगियों को सोंठ, काली मिर्च तथा पिपली डालकर 22 दिनों तक मिश्रित छाछ दिया जाय तो विकार दूर होता है। पांडू (एनीमिया) रोगियों को भी मीठा छाछ लेने से शरीर में रक्त निर्माण होकर दुर्बलता कम होती है। शरीर पर सूजन आई हो तो चित्रक–मिश्रित छाछ 40 दिनों तक लगातार लेने से शरीर में अभूतपूर्व शक्ति संचार होता है। इसीलिए वैद्यों की सलाह लेकर छाछ पीना अमृत समान है। पेट के कृमियों का नाश होता है। भोजन में कम–से–कम एक छोटी कटोरी भर छाछ हो तो भविष्य की अनेक बीमारियों को दूर रखा जा सकता है।

छाछ से इतने लाभ होने पर भी शरद ऋतु में छाछ न पीने की सलाह दी गई है। जिन्हें किन्हीं कारणों से मतली–चक्कर आता हो या जो बहुत क्षीण–कमजोर हों, उन्हें तो छाछ पीना ही नहीं चाहिए। नाक से खून बहता हो, शरीर में जलन हो या शरीर पर किन्हीं कारणों से जख्म हो तो उन्हें तक्र–सेवन (छाछ) निषेध कहा गया है।

इस प्रकार हींग, जीरा, सैंधव नमक मिलाया हुआ छाछ अत्यन्त वातनाशक, अर्श (पाइल्स), अतिसार (डायरिया) नाशक एवं बस्ती–शूल (अधोउदर दर्द यानी नाभि के नीचे का दर्द) नाशक तो है ही, साथ में पाचन क्रिया के लिए सहायक, शरीर को पुष्ट करने वाला, बल वृद्धि करने वाला तथा बीमार व्यक्तियों को राहत देने वाला भी है। इससे बहुतायत में सभी को लाभ ही मिलता है, अतः इस पृथ्वी के 'अमृत' से सभी लाभ उठा सकते हैं।

संपर्क : प्रधान वैद्या –गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार, नागपुर

समाचार श्रंखला

देश के 17 राज्यों में भारतीय गौविज्ञान परीक्षा सम्पन्न

जयपुर। अखिल भारतीय स्तर पर दिनांक 30.9. 2011 को भारतीय गौविज्ञान परीक्षा देश के 17 राज्यों में सम्पन्न हुई। परीक्षा समिति के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुरेश कुमार सेन ने बताया कि जम्मू कश्मीर, हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, आसाम, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा और कर्नाटक राज्यों में एक लाख 35 हजार परीक्षार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया। कानपुर, शाहजहांपुर (उ.प्र.) बोकारो (झारखंड), अंगूल (उड़ीसा) व बिहार के कुछ स्थानों पर परीक्षा 17 अक्टूबर 2011 को सम्पन्न हुई।

परीक्षा चार भाषाओं में सम्पन्न हुई :

- दिनांक 30.9.2011 को आयोजित भारतीय गौविज्ञान परीक्षा हिन्दी, गुजराती, मराठी व अंग्रेजी भाषा में आयोजित हुई।
- सर्वाधिक परीक्षार्थी राजस्थान से– इस वर्ष भी इस परीक्षा में राजस्थान से ही सर्वाधिक परीक्षार्थियों ने भाग लिया।
- झाारखंड राज्य की एक जेल में भी हुई परीक्षा। झारखंड राज्य के बोकारो जिले की जेल में 50 कैदियों ने भी भारतीय गौविज्ञान परीक्षा देकर गाय के महत्व को जाना।
- **स्कूलों का प्रतिनिधित्व**– देश के 17 राज्यों से लगभग 3000 स्कूलों ने इस गौविज्ञान परीक्षा में भाग लिया।

❖❖❖❖

महादेव पुरा की गो सेवा समिति को हर संभव मदद मिलेगी

कोटखावदा। गो सेवा समिति, दैनिक भास्कर एसएमडी टीम, जिला अंधता निवारण समिति एवं कैलगिरी नेत्र चिकित्सालय जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किए गए निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि चाकसू उपखंड अधिकारी संजय कुमार माथुर ने कहा कि जन कल्याण के लिए की जाने वाली सेवा ही सबसे बड़ा पुनीत कार्य है। इसमें हर व्यक्ति को शामिल होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि महादेवपुरा की गो सेवा समिति को हर संभव मदद दी जाएगी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जीएसएस अध्यक्ष श्रवण लाल गुर्जर, घुमंतू महासंघ के प्रदेशाध्यक्ष विजेंद्र सिंह बंजारा तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे बस्सी के पूर्व विधायक डॉ. कन्हैयालाल मीणा ने गो सेवा समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। शिविर में डॉ. रक्षिता कोठारी ने 175 लोगों की आंखों की जांच कर 150 को निःशुल्क दवाइयां वितरित कीं तथा 25 मरीजों को ऑपरेशन के लिए जयपुर कैलगिरी अस्पताल ले जाया गया। इस मौके पर ग्राम सरपंच आनंदी जोशी, कोटखावदा के पूर्व सरपंच सत्यनारायण विजय, हरिनारायणपुरा सरपंच नाथू लाल शर्मा आदि मौजूद थे। गो सेवा समिति अध्यक्ष ईश्वर लाल बैरवा ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा अधिकारी शिव शंकर प्रजापति ने किया। कार्यक्रम में गो सेवा के लिए दाना देने वाले भामाशाहों को सम्मानित भी किया गया।

साभार– दैनिक भास्कर, 09.10.11

❖❖❖❖

गो भक्त हरदेव सहाय के जीवन पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली (एसएनबी)। गोभक्त एवं स्वतंत्रता सेनानी लाला हरदेव सहाय के जीवन पर आधारित किताब का विमोचन अध्यात्मिक गुरु श्री श्रीरविशंकर व पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शंकराचार्य स्वामी माधवाश्रम जी महाराज ने की। इस मौके पर श्री श्रीरविशंकर ने कहा कि लाला हरदेव सहाय संत पुरुष थे। उन्होंने जागरूकता अभियान चलाकर हस्तकला केंद्रों के माध्यम से रोजगार के अवसर मुहैया कराए। उनका संघर्ष और आदर्श हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहेगा। लालकृष्ण आडवाणी जी ने कहा कि गोरक्षा अभियान का श्रेय लाला जी को जाता है। उनका जीवन गौरक्षा के प्रति समर्पित रहा। **–रा. सहारा, दिल्ली**

❖❖❖❖

गोरक्षा कार्यकर्ताओं की बैठक सम्पन्न

शहिबाबाद (उ.प्र.)। गत माह 16 अक्टूबर को गोरक्षा आयाम विहिप. के कार्यकर्ताओं की बैठक वसुन्धरा स्थित आदर्श पार्क में सम्पन्न हुई। प्रान्तीय उपाध्यक्ष श्री नितिन त्यागी ने बैठक की अध्यक्षता की।

इस अवसर पर प्रान्त सह गोरक्षा प्रमुख श्री नीरज भारद्वाज ने गोवंश की तस्करी एवं गोधन पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहा आज केन्द्र व राज्यसरकार गोभक्षक बनी हुई हैं। उन्होंने कहा कि यदि गोवध बंद नहीं हुआ तो संगठन के कार्यकर्ता आंदोलन छेड़ने को बाध्य हो जाएंगे। बैठक में श्री नरेश भटनागर, श्री संजय गोयल, श्री संतोष श्रीवास्तव, श्री अजय बाल्मीकि एवं अमित शर्मा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रिंस त्यागी ने किया।

विहिप और बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने 700 गायों का जीवन बचाया

भोपाल। सिरोंज के विहिप व बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने कुछ लोगों को 700 गायों के साथ जाते हुए देखा। पूछताछ करने के लिए जैसे ही उनको रोका, वे भाग खड़े हुए। उन्होंने त्वरित थाने में एफ.आई.आर. दर्ज कराने के बाद जीव दया गौरक्षण एवं पर्यावरण संवर्द्धन केन्द्र, ग्राम डोब बरखेडी गौशाला से सम्पर्क किया। गोशाला समिति ने उन गौमाताओं की सारी जिम्मेदारी के लिए सहर्ष सहमति दे दी।

क्षेत्र के लोगों एवं प्रशासन के सहयोग से गत 18–9–2011 को सायं 4 बजे गौमाताओं को गौशाला में पहुंचा दिया गया। इस तरह 700 गौमाताओं का जीवन बचाया जा सका। गौमाताओं की आगवानी में जैन संत बालब्रह्मचारी शिवानन्द जी वणी के सानिंध्य में भोपाल संभाग कमीश्नर श्री मनोज श्रीवास्तव, भारतीय किसान संघ के प्रदेशाध्यक्ष श्री शिव कुमार शर्मा (कक्का जी), विहिप के प्रान्तीय संगठन मंत्री रोहित जी, विभागाध्यक्ष दिलीप खण्डेलवाल जी, प्रान्तीय गौरक्षा प्रमुख भाई अशोक जी जैन (शान्ती शीड्स), प्रान्तीय गौरक्षा सह सचिव के.जी.माली एवं शाहजहांनाबाद दिगम्बर जैन मन्दिर के अध्यक्ष विजय जैन उपस्थित थे। गायों की आगवानी के उपरांत गायों को गौशाला लाने वाले सहयोगियों का सम्मान एवं उन्हें उचित पारितोषित प्रदान किया गया। यह जानकारी विहिप कार्यकर्ता इदालुंग क्वामे द्वारा दी गई।

गोमूत्र से 400 घंटे तक जलाया 3 वॉट का बल्ब

भोपाल। 400 ग्राम गोमूत्र की बैटरी से 3 बॉट का बल्ब 400 घंटे तक जलाया जा सकता है। 12 वोल्ट की इस 'गोज्योति बैटरी' से मोबाइल भी चार्ज हो सकता है।

इसे कानपुर (उत्तरप्रदेश) की गोशाला द्वारा बनाया गया है। इसे बिजली से चार्ज करने की जरुरत भी नहीं होती। कानपुर गोशाला के महामंत्री पुरुषोत्तम तोषणीवाल के अनुसार यह बिजली का वैकल्पिक साधन बन सकती है। तोषणीवाल ने दावा किया कि बिजली से चार्ज होने वाली बैटरियां 5–6 घंटे तक ही काम करती हैं, जबकि गोज्योति बैटरी 400 ग्राम गोमूत्र से 400 घंटे तक चलती है। मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम ने इस बैटरी को परीक्षण के लिए भोपाल के राजीव गांधी विवि में भेजा था। परीक्षण में 400 घंटे में मात्र 3 फीसदी वोल्टेज कम हुआ। इससे 12 घंटे तक मोबाइल चार्ज करके भी देखा गया। तोषणीवाल के अनुसार इस गोज्योति बैटरी की लागत 3500 रुपए आती है। उत्तराखंड सरकार ने अपने कई दफ्तरों में इसका उपयोग करना शुरू कर दिया है। छत्तीसगढ़ सरकार भी कार्यालयों में उपयोग के लिए ये बैटरी खरीदने वाली है।

साभार – स्वदेश

बजरंग दल ने पशुओं को बचाया।

बैतूल। क्षेत्र के सुनसान क्षेत्र से निरीह मूक पशुओं को क्रूरता पूर्वक मारते, पीटते, घसीटते हुए कत्लखाने ले जाते समय दो आरोपियों को चांदू में नवगठित बजरंग दल के सदस्यों ने रंगे हाथों धर दबोचा तथा पशुओं को ग्रामीणों तथा दोनों आरोपियों को झल्लार पुलिस के सुपुर्द कर दिया। गत माह 5 बजे सुबह एक बैल एवं एक गाय को जमन्या निवासी भारत पिता कुंजी एवं मिस्त्री पिता गुरुबक्श ग्राम डोडरा के पास से मारते–पीटते–घसीटते हुए निर्दयता पूर्वक कत्लखाने की ओर ले जा रहे थे तभी उनको पकड़ा गया।

गाय से गांव और गांव से पर्यावरण की रक्षा

- विजय कुमार

ग्राम्य जीवन का आधार गाय है। गाय से प्राप्त दूध, दही, घी आदि हमें स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। उसके गोबर और गोमूत्र से खेती को उन्नत करने वाली खाद और कीटनाशक बनते हैं। मरने के बाद भी उसकी खाल और सींग के अनेक उपयोग हैं।

इन दिनों पूरा विश्व जिन अनेक संकटों से जूझ रहा है, उनमें पर्यावरण का संकट भी बहुत महत्वपूर्ण है। यों तो पर्यावरण संरक्षण की बात करना इन दिनों एक फैशन बन गया है। भारत में काम करने वाले लाखों अ–सरकारी संगठन (एन.जी.ओ) पर्यावरण के लिए ही काम कर रहे हैं; पर उनके प्रयासों के बाद भी यह संकट हल होने की बजाय बढ़ ही रहा है।

इसका कारण यह है कि उनमें से लगभग 98 प्रतिशत का उद्देश्य पर्यावरण को बचाना नहीं, अपितु प्रचार और प्रसिद्धि पाकर अपनी जेब भरना है। ऐसे सभी संगठन महानगरों के वातानुकूलित दफ्तरों में बैठकर, पंचतारा होटलों में सेमिनार कर तथा वातानुकूलित गाड़ियों में घूमकर लोगों को पर्यावरण का संदेश देते फिरते हैं। सच तो यह है कि ये स्वयं पर्यावरण का विनाश करते हैं।

पर्यावरण की परिभाषा में जल, जंगल, जमीन और खेतीबाड़ी से लेकर मौसम तक सब शामिल हैं। इसे क्षति पहुंचाने के सबसे बड़े अपराधी दुनिया के वे तथाकथित विकसित देश हैं, जो दुनिया के हर संसाधन को पैसे और ताकत के बल पर अपनी झोली में डाल लेना चाहते हैं। अत्यधिक बिजली और ऊर्जा संसाधनों का उपयोग कर वे अपने साथ–साथ पूरे विश्व को संकट में डाल रहे हैं। ग्रीन हाउस गैसों का सर्वाधिक उत्सर्जन वही कर रहे हैं, जिससे ओजोन परत लगातार क्षतिग्रस्त हो रही है। विश्वव्यापी गर्मी (ग्लोबल वार्मिंग) का कारण ओजोन का क्षरण ही है।

जहां तक भारत की बात है, तो यहां पर्यावरण को सर्वाधिक क्षति शहरीकरण के कारण हुई है। आजादी से पूर्व गांधी जी भारत को एक ग्रामीण देश बनाना चाहते थे। अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज में उन्होंने इस बारे में विस्तार से लिखा है; परन्तु उन्होंने अपना उत्तराधिकारी जिसे बनाया, वह जवाहरलाल नेहरू भारत को शहरों का देश बनाना चाहते थे। वे गांवों को पिछड़ेपन का प्रतीक मानते थे। उन्हें खेती की बजाय उद्योगों में भारत की उन्नति नजर आती थी। रूस और इंग्लैंड से प्रभावित नेहरू के प्रधानमंत्री बनने से ग्रामीण विकास की गति अवरुद्ध हो गयी और शहरीकरण बढ़ने लगा। पर्यावरण का संकट इसी का परिणाम है। दुनिया में जितनी ग्रीन हाउस गैसें उत्सर्जित हो रही हैं, उसका 1/5 भाग भारत उत्सर्जित करता है।

पश्चिमी देशों का भारत तथा उस जैसे विकासशील देशों पर यह आरोप है कि पशुओं के गोबर और जुगाली करने से बहुत बड़ी मात्रा में मीथेन गैस निकलती है, जो धरती के बढ़ रहे तापमान का प्रमुख कारण है। इसलिए वे चाहते हैं कि इन पशुओं को क्रमशः समाप्त कर पूरी खेती मशीनों के आधार पर हो; पर सच यह है कि सबसे अधिक (21.3 प्रतिशत) ग्रीन हाउस गैसें विद्युत निर्माण संयंत्रों से निकलती हैं। इनमें परमाणु ऊर्जा से बनने वाली बिजली का योगदान सर्वाधिक है। परमाणु ऊर्जा संयंत्रों से होने वाले महाविनाश का ताजा उदाहरण जापान है। इससे पूर्व सोवियत संघ में हुई चेर्नोबिल दुर्घटना भी बहुत पुरानी नहीं है।

इसके बाद 16.8 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसें औद्योगिक इकाइयों से तथा 14 प्रतिशत परिवहन से उत्पन्न होती हैं। इन दिनों खेती में अन्न के बदले जैविक ईंधन उगाने का फैशन चल निकला है। इस ईंधन से भी 11.3 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसें उत्पन्न हो रही हैं। स्पष्ट है कि वैश्विक गरमी का कारण भारत की परम्परागत कृषि प्रणाली नहीं, अपितु तथाकथित उन्नत देशों की मशीनी पद्धति है।

मोबाइल इन दिनों जीवन की आवश्यकता ही नहीं अनिवार्यता बन गये हैं। इसके कारण पूरी दुनिया हमारी मुट्ठी में समा गयी है; पर हर समय कान में घुसे तार से युवा पीढ़ी कान और मस्तिष्क संबंधी रोगों की शिकार भी हो रही है। ट्विटर और फेसबुक से चिपके छात्र हर दिन अपने खेलकूद का पूरा समय इसी में

खर्च कर देते हैं। इसका असर जहां उनकी पढ़ाई पर पड़ रहा है, वहां वे मोटे भी हो रहे हैं। मोबाइल से चिपके लोगों का ध्यान इस ओर भी नहीं जाता कि मोबाइल टावर हर साल 60 करोड़ लीटर डीजल पी जाते हैं। इनसे निकलने वाली ध्वनि तरंगों के कारण मधुमक्खी, तितली और गौरैया जैसे मानवमित्र कीट और पक्षी समाप्त हो रहे हैं।

परिवहन के आधुनिक साधनों ने दूरियां घटाई हैं; पर दुनिया का 60 प्रतिशत तेल इसी में खर्च होता है। एक बोइंग 747 विमान दो मिनट में जितनी ऊर्जा खर्च करता है, उतनी ऊर्जा से घास काटने वाली एक लाख मशीनें लगातार आठ घंटे तक चल सकती हैं। पूरी दुनिया में होने वाले कार्बन उत्सर्जन का दो प्रतिशत वायुयानों के कारण है।

शहरी जीवन का आधार है बिजली। घर में कपड़े धोने से लेकर चटनी पीसने तक के काम अब मशीनों से होने लगे हैं और ये मशीनें बिजली से चलती हैं। शहरों में दूरियां बहुत अधिक होती हैं। पुरुष अपने काम के लिए घर से दस–बीस कि.मी दूर जाता ही है। बच्चे भी पढ़ने के लिए बस या टैक्सी में बैठकर इतनी ही दूर जाते हैं। केवल पढ़ाई ही क्यों, कई तरह की ट्यूशन के लिए भी उन्हें हर दिन इतनी ही यात्रा और करनी पड़ती है। ये वाहन तेल से चलते हैं, जो भरपूर प्रदूषण फैलाते हैं। इन दिनों शहरों में हर युवक पर मोटरसाइकिल और युवती पर स्कूटर होना अनिवार्य–सा हो गया है। इस भागमभाग से दुर्घटनाएं भी बढ़ रही हैं। शहर में हर व्यक्ति औसतन 300 लीटर पानी भी हर दिन खर्च कर देता है।

इसके दूसरी ओर ग्राम्य जीवन को देखें, तो वहां का जीवन सरल और न्यूनतम आवश्यकताओं पर आधारित है। घर से खेत, विद्यालय और बाजार आदि की दूरी कम होने के कारण आसानी से लोग पैदल या साइकिल से चले जाते हैं। पेड़–पौधे और नदी–तालाब के कारण मौसम न अधिक ठंडा होता है और न अधिक गरम। गरमी में लोग पेड़ के नीचे, तो सरदी में अलाव के पास बैठकर शरीर को आराम देते हैं। वहां शहर की तरह कूलर या हीटर की आवश्यकता नहीं होती। ईंधन भी खेत से मिल जाता है और शेष कमी गोबर के कंडे पूरी कर देते हैं। अर्थात न गैस की आवश्यकता है और न हीटर की। अब तो गोबर से गैस और बिजली भी बनने लगी है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम फिर से ग्राम्य जीवन को अपनाएं। भारत की अधिकांश समस्याओं की जड़ शहरीकरण है। ग्राम्य जीवन संतोष और शांति देता है, जबकि शहरी जीवन तनाव। इसलिए इन दोनों में कुछ संतुलन होना चाहिए। गांवों में आवश्यक बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि की सुविधा पहुंच जाए, तो लोग शहरों की ओर भागना बंद कर दें।

ग्राम्य जीवन का बहुत बड़ा आधार गाय है। गाय से प्राप्त दूध, दही, घी आदि हमें स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। उसके गोबर और गोमूत्र से खेती को उन्नत करने वाली खाद और कीटनाशक बनते हैं। मरने के बाद भी उसकी खाल और सींग के अनेक उपयोग हैं। गियर और हल्के पहिये लगाकर कुछ वैज्ञानिकों ने बैलगाड़ी को उन्नत किया है। इससे बैलों की शक्ति कम खर्च होती है तथा ग्राम्य परिवहन की गति बढ़ी है। इस ओर यदि कुछ और शोध हो, तो गोवंश के बल पर ग्राम लगभग स्वावलम्बी हो सकता है।

स्पष्ट है कि यदि पर्यावरण की रक्षा करनी है तो फिर से गांवों की ओर जाना होगा। इसका अर्थ शहर में रहकर कमाये गये पैसे से वहां शहरों जैसी सुविधाएं जुटाना नहीं, अपितु सरल और साधारण जीवन शैली को अपनाना है। इसमें गाय केन्द्र बिन्दु बन सकती है। यदि नौकरी अथवा व्यापार के दौरान शहर में रहने वाले लोग अवकाश प्राप्ति के बाद वानप्रस्थ आश्रम के संतोषी जीवन का व्रत लेकर अपने मूल गांव में बसने लगें तो उनके अनुभव और योग्यता का लाभ पूरे गांव के साथ–साथ गोवंश को भी मिलेगा।

संपर्क : संकटमोचन आश्रम,
आर.के. पुरम्, सै.– 6,
नई दिल्ली – 110022
vijaipath.blogspot.com

गतांक से आगे....

गौशाला प्रबन्धन, व्यवस्थापन एवं आर्थिक स्वावलम्बन

प्रसव के 60–70 दिन पूर्व से गाय को विशेष पौष्टिक चारा व रातब देना चाहिये तथा दुहना बंद कर देना चाहिये, जिससे उसके गर्भ में स्वस्थ व बलिष्ट बछिया-बछड़े की निर्मिति हो तथा गाय की दुग्धोत्पादन क्षमता बढ़े।

प्रजनन (Breeding) प्रबंधन

बछिया-बछड़े के गर्भ में आने से पूर्व सावधानियां :

गाय के गर्भधारण करने से पूर्व हम भावी बछिया/बछड़े के उन्नत होने की तैयारी आरम्भ करें। पिछले ब्यात के दो से चार माह के बीच सामान्यतः प्रत्येक देशी गाय हरी होने के लक्षण प्रकट करती है। उसी समय उसको हरी कराना चाहिए। उस अवसर को जाने नहीं देना चाहिये अन्यथा 21 दिन बाद फिर वह अवसर आयेगा तथा 21 दिन का समय व्यर्थ चला जायेगा। उस समय उसको उसी की नस्ल के ऐसे देशी अभिजात्य सांड़ से हरी कराना चाहिये जो पूर्णतः स्वस्थ हो तथा जिसकी मां उस गाय की अपेक्षा जिसे हरी होना है, कम से कम दो गुना दूध देती रही हो। सांड़ के आकार व बजन में तथा गाय के आकार व बजन में बहुत अधिक अंतर न हो। परिणामतः उससे पैदा होने वाली बछिया सुन्दर, सुडौल तथा अपनी मां से डेढ़ गुना दूध देने वाली होगी।

प्रसव के पूर्व और प्रसव के बाद की सावधानियाँ -

प्रसव के 60–70 दिन पूर्व से गाय को विशेष पौष्टिक चारा व रातब देना चाहिये तथा दुहना बंद कर देना चाहिये जिससे उसके गर्भ में स्वस्थ व बलिष्ट बछिया–बछड़े की निर्मिति हो तथा गाय की दुग्धोत्पादन क्षमता बढ़े। प्रसव एकान्त एवं छत वाले स्थान पर कराना चाहिये, तथा प्रसव के समय गाय का स्वामी/सेवक अथवा चिकित्सक रहना चाहिये। यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि गाय अपनी जेर खा न ले अथवा कुत्ते, कौवे, चील उसे क्षत–विक्षत न कर दें। जेर छोड़ने पर उसे जमीन में दबा देना चाहिये। प्रसव के बाद 3–4 दिन तक उसे सोंठ, अजवायन व गुड़ तथा पानी के मिश्रण को आग पर उबाल कर उसमें थोड़ा गाय का घी मिला कर पिलाना चाहिये तथा भूसे में हरा चारा मिला कर देना चाहिये। पानी थोड़ा कुनकुना करके पिलाना चाहिये। इससे वह स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेगी तथा दूध भी अधिक देगी।

नामकरण, जन्मपत्री :

प्रत्येक गोवंशीय प्राणी को नाम दें। नवजात बछिया–बछड़े की जन्म कुंडली बनवाएं, जिसमें उसके जन्म का दिन, समय, स्थान व उसके नाम के साथ–साथ उसकी माता व पिता के नाम व गुणों, विशेष रूप से दुग्ध उत्पादन क्षमता का भी उल्लेख हो। आगे चल कर जैसे–जैसे उसके गुण

प्रकट हों उनका भी उल्लेख उसमें किया जाता रहे। बछिया हरी हो या बछड़ा बधिया किया जाये, उसका दिनांक, बछिया के गाय बनने पर ब्याने का दिनांक तथा पैदा हुए बछिया अथवा बछड़े आदि का उल्लेख भी किया जाना चाहिए। प्रतिदिन, प्रति सप्ताह अथवा प्रतिमाह उसके द्वारा दुग्ध उत्पादन की मात्रा भी लिखी जाए ताकि पूरे ब्यात में कुल दुग्ध उत्पादन की मात्रा ज्ञात हो सके।

हर चार वर्ष में सांड़ का स्थानान्तरण :

किसी भी सांड़ को एक गोशाला अथवा एक ग्राम में 4 वर्ष से अधिक न रखा जाये। परस्पर विनिमय/स्थानान्तरण प्रत्येक चार वर्ष में करते रहना चाहिए। पिता द्वारा पुत्री का गर्भाधान नहीं कराना चहिए। इससे विकास की प्रक्रिया बाधित होगी।

कृत्रिम गर्भाधान :

यह विधि प्राकृतिक गर्भाधान से घटिया है। उन्नत सांड़ के वीर्य को तरल नाइट्रोजन कन्टेनर में रखा जाता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग किया जाता है, किन्तु इसके परिणाम निराशाजनक हैं। प्राकृतिक गर्भाधान ही कराना चाहिए।

विदेशी नस्ल के सांड़ से देशी नस्ल की गाय का संकरीकरण हानिकारक

गोवंश के देशी नस्लों के ह्रास के वास्तविक कारणों की ओर ध्यान न देते हुए भारत सरकार ने गोवंश की नस्ल सुधार के लिए विदेशी नस्ल के सांड़ों का आयात कर उनके माध्यम से अनामित (Non-Discript) देशी नस्लों के विकास हेतु उनके संकरीकरण की योजना लगभग 40 वर्ष पूर्व आरम्भ की। कालांतर में यह योजना केवल अनामित देशी नस्लों के लिए नहीं बल्कि व्यवहार में सभी नस्लों के लिए प्रचलित हो गयी। परिणामस्वरूप भारतीय गोवंश की आलम्बादी, विंझर, खटियाली,

पुलीकोलन, वरगुर व रायचुरी नस्लें लुप्त हो चुकी हैं। अन्य कई नस्लें लुप्त होने की कगार पर हैं। गोवंश की विदेशी नस्लें होस्ट्रियन, फ्रिजियन व जर्सी अपने साथ कई ऐसी बीमारियां लाई हैं जो भारत में कभी देखी और सुनी नहीं गयीं। जैसे गर्भ का परिपक्व होने से पहले ही गिर जाना, अकस्मात लालरंग का पेशाब करना और मृत्यु हो जाना। विदेशी गोवंश, देशी नस्ल के गोवंश की अपेक्षा लगभग दुगुना खाता है, बीमारी होने पर भी खाता रहता है और बीमारी अधिक बढ़ जाने पर उसकी मृत्यु हो जाती है। विदेशी नस्ल में देशी नस्ल की अपेक्षा मृत्यु दर कहीं ज्यादा है। रोगों का प्रतिरोध करने की शक्ति उनमें बहुत कम है। विदेशी नस्ल के बछिया–बछड़े में गर्मी सहन करने की क्षमता कम होती है। मई जून के माह की तेज गर्मी में प्रायः उनकी मृत्यु हो जाती है। कंधा न होने के कारण कृषि कार्य तथा परिवहन भली भांति नहीं कर पाता। थोड़ा ही परिश्रम करके हांफ जाता है। गोवंश के विकास के नाम पर संकरीकरण उसका विनाश है। विदेशी नस्ल की गाय के दूध में वह पौष्टिकता, सात्विकता एवं स्वाद नहीं होता जो देशी नस्ल की गाय के दूध में होता है। उनकी आवाज भी कर्कश होती है। भारतीय गोवंश में उपलब्ध प्रेम, वात्सल्य, सहिष्णुता आदि अनेक दिव्य गुण हैं, जो विदेशी नस्ल के गोवंश में नहीं पाये जाते। यहां तक कि देशी नस्लों की गाय के गोबर व गोमूत्र में जो मलशोधक एवं औषधीय गुण पाये जाते हैं वे विदेशी नस्ल की गाय के गोबर व गोमूत्र में उपलब्ध नहीं हैं। देशी नस्ल की गाय के दूध, दही, घी, गोबर व गोमूत्र से बनाया गया पंचगव्य ही ग्रहण करने योग्य है।

सेवा सुश्रुसा :

गाय एक बुद्धिमान एवं संवेदनशील प्राणी है। सेवकों के ऊपर छोड़ने से वह अपने को उपेक्षित अनुभव करती है। अतएव गोशाला के पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों को गोशाला की गायों पर व्यक्तिगत ध्यान देना चाहिए। उससे वह प्रसन्न रहती हैं तथा उनका समुचित विकास होता है। उनके ऊपर प्रेम से हाथ फेरना, खुरेरा

करना, ब्रुश से उनकी सफाई करना, उन्हें स्नान कराना, चारा डालना, पानी पिलाना उनकी सेवा के अंग हैं। इससे दूध में भी वृद्धि होती है।

सद्व्यवहार :

गाय यदि दूध दूहने में व्यवधान उत्पन्न करे तो उसकी मनःस्थिति को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। गाय पर क्रोध करके उसे प्रताड़ित करने अथवा उसके साथ मारपीट करने से उसके मन, शरीर व दुग्धोत्पादन क्षमता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। गाय के सामने उसके बछिया/बछड़े को मारने, पीटने से भी उसका तनाव बढ़ जाता है तथा उसके हार्मोन असंतुलित हो जाते हैं।

स्वच्छता :

गाय स्वच्छ रहना पसंद करती है और स्वच्छ वातावरण में रहना चाहती है। उसके शरीर पर लगे गोबर, चीचड़ी व कलीलों को नित्य हटाते रहना चाहिये। गर्मियों में प्रतिदिन तथा सर्दियों में सप्ताह में दो बार उसे स्नान कराना चाहिये। उनकी खोर, चरही तथा गोष्ठ की सफाई बराबर होती रहनी चाहिये।

मधुर संगीत :

गाय को बांसुरी बादन, बीणा वादन, भजन गायन व मधुर संगीत बहुत पसंद है। दूध दूहते समय गाय को यह सुनाया जाये तो दूध की मात्रा बढ़ जाती है।

बांझपन निवारण :

गायों मे बांझपन की समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिसका निवारण/उपचार किया जाना अति आवश्यक है। बांझपन पोषक तत्वों विशेषकर लवण मिनरल की कमी से होती है। अतः गाय को भरपेट हरा व सूखा चारा तथा 30–50 ग्राम लवण मिश्रण चारे में मिलाकर प्रतिदिन खिलाना चाहिये। जनेन्द्रियों से संबद्ध विभिन्न रोगों की जांच किसी अनुभवी पशु चिकित्सक से करा कर समुचित इलाज कराना उपयुक्त एवं लाभकारी होगा। चना तथा मैथी को अंकुरित करके 100 ग्राम प्रतिदिन तीस दिन तक खिलाने से भी लाभ होता है। 100 ग्राम खड़िया तथा 100 ग्राम नमक प्रतिदिन 15 – 20 दिन खिलाने से भी बांझपन दूर होता है। इंडियन हर्ब्स लि. सहारनपुर द्वारा उत्पादित आयुर्वेदिक औषधि **"प्रजना"** भी लाभदायक है।

गोवंश के रोगों की रोकथाम एवं चिकित्सा :

भगवान ने गोवंश के शरीर की रचना इस प्रकार की है कि वह सामान्यतः बीमार नहीं होती। गन्दा पानी पीना, अयोग्य आहार ग्रहण करना, प्रदूषित वातावरण में रहना अथवा किसी दूसरे प्राणी से संक्रामक रोग के रोगाणु लगने से वह बीमार होती है। गोवंश में होने वाले रोग तीन प्रकार के हैं। 1. संक्रामक, 2. असंक्रामक, 3. शरीर के ऊपर के रोग। संक्रामक रोगों में गलघोटू, खुरपका–मुंहपका, लगड़िया रोग (Black Quarter) की रोकथाम के लिए चिकित्सक से परामर्श कर निर्धारित समय पर टीकाकरण कराना चाहिये। संक्रामक, असंक्रामक तथा शरीर के ऊपर के रोगों की चिकित्सा के लिए चार पद्धतियां प्रचलित हैं। 1. आयुर्वेदिक, 2. एलोपैथिक, 3. होम्योपैथिक, 4. परम्परागत देशी चिकित्सा। मनुष्य और गोवंश के उपचार में काफी समानता है। गोवंश के उपचार के लिए उसके शरीर के आकार के अनुसार औषधि की खुराक अधिक देनी होती है। आयुर्वेद के अनुसार गोवंश के रोग भी वात, पित्त, कफ के असंतुलन से ही होते हैं। "गव्यायुर्वेद" में उनकी चिकित्सा का विधान है। कल्याण के गोसेवा अंक 1995 में पृष्ठ 306 पर "गायों के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा" में परम्परागत देशी चिकित्सा, जो लगभग आयुर्वेदिक चिकित्सा जैसी ही है, का विशद वर्णन किया गया है। "हर्बस (इण्डिया) लि.", बंगलौर, इण्डियन हर्बस लि. "सहारनपुर तथा डाबर (इण्डिया) लि." गाजियाबाद गोवंश के लिए आयुर्वेदिक औषधि का निर्माण कर वितरण कर रही हैं। उन्होंने इससे संबंधित साहित्य की भी रचना की है। गो सेवा अंक के ही पृष्ठ 319 पर "गौ के प्रमुख रोग एवं उनकी चिकित्सा" शीर्षक से गौ के रोगों की होम्योपैथिक चिकित्सा विधि विस्तार से बतायी गयी है।

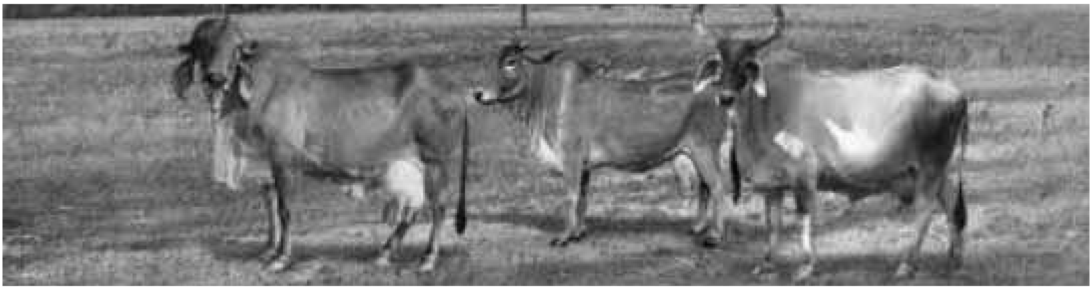

क्रमशः

विश्व हिन्दू परिषद-केन्दीय कार्यालय में गोपाष्टमी पर्व हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

"गावो विश्वस्य मातर:" गौ समस्त विश्व की माता है।

गोपूजन करने के पश्चात विहिप के संरक्षक एवं मार्गदर्शक आचार्य गिरिराज किशोर जी अन्य लोगों से वार्तालाप करते हुए (दाएं)।

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद के केन्दीय कार्यालय में कार्तिक शुक्ल अष्टमी तिथि (3 नवम्बर,2011) को गोपाष्टमी पर्व मंत्रोच्चारण सहित विधि–विधानपूर्वक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। विहिप. के संरक्षक एवं मार्गदर्शक आचार्य गिरिराज किशोरजी एवं जैन संत प्रमोद मुनि जी ने गोमाता का विधिवत शाल ओढ़ाकर एवं रोली–अक्षत लगाते हुए तथा पुष्पमालाएं पहनाकर पूजन किया और मिष्ठान (गोग्रास) खिलाया।

पूजन सम्पन्न होने के पश्चात जैन मुनि प्रमोद जी ने कहा कि 'अहिंसा' धर्म का पालन करने से ही सभी का कल्याण संभव है। इस अवसर पर पधारे पूज्य डॉ राधाकान्त वत्स जी ने कहा कि आज सभी लोग अपने सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य प्राप्त करने एवं सभी कष्ट दूर करने के लिए समस्त देवी–देवताओं से प्रार्थना करते हैं और गाय की उपेक्षा कर रहे हैं, जबकि यथार्थ में आज गाय के अस्तित्व पर आसन्न संकट है। इसलिए सभी को गोमाता की सेवा–रक्षा का संकल्प लेना चाहिए, क्योंकि मात्र गाय ही सब का कल्याण करने एवं पालन–पोषण करने में सक्षम है, अन्य कोई नहीं।

कार्यक्रम के अन्त में विहिप. के केन्दीय मंत्री (कार्यालय) श्री वेंकेट कोटेश्वर राव जी ने अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया। इस पावन अवसर पर सर्वश्री मोहन जोशी जी, वीरेश्वर द्विवेदी जी, विजय कुमार जी, प्रकाश शर्मा जी, ब्रह्मानन्द जी, धीर जी, आनन्द प्रकाश हरबोला जी, सुरेन्द्र सिंह जी, मानवेन्द्र द्विवेदी जी, राष्ट्र प्रकाश जी, ताराचन्द जी, अरविन्द मिश्रा जी, लवकेश गौड़ जी, सत्य नारायण जी, बनवारी लाल जी, संजय गुप्ता जी, विजय शर्मा जी, विजय खुराना जी, श्रीमती सिम्मी जैन जी, पार्षद श्रीमती अनीता गुप्ता जी एवं अन्य पदाधिकारीगण सहित कार्यालय के समस्त कर्मचारीगण व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

–संपादक

गोमाता को गोग्रास खिलाते हुए विहिप के केन्द्रीय मंत्री (कार्यालय) श्री बेंकेट कोटेश्वर राव जी एवं तपन जी।

गौशाला प्रतिनिधि सम्मेलन जयपुर में आयोजित

भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्धन परिषद, जयपुर के तत्वावधान में गत 25 सितम्बर को गौशाला प्रतिनिधि सम्मेलन भारतमाता मंदिर, जयपुर में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में हिन्दुत्व के मौलिक चिंतक पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी को श्रद्धांजलि देने के साथ ही विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय अशोक सिंहल जी के 86वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 19 गौशालाओं को अनुदान दिया गया।

सम्मेलन में विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं गोरक्षा विभाग के प्रभारी श्री हुकुमचन्द सावला जी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। 25 सितम्बर को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की 96वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर उनके जीवन की अनेक प्रेरक घटनाओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही माननीय अशोक सिंहल जी द्वारा राष्ट्र एवं हिन्दू समाज के लिए किये जा रहे उल्लेखनीय कार्यों की जानकारी देते हुए परमपिता परमेश्वर और गोमाता से उन्हें स्वस्थ रखकर सतायु से भी अधिक समय तक हिन्दू समाज की सेवा एवं नेतृत्व करने के लिए प्रार्थना की गई।

इस अवसर पर जयपुर प्रान्त के कार्यकारी अध्यक्ष श्री जयबहादुर सिंह शेखावत जी ने श्री हुकुमचन्द सावला जी, परम पूज्य महन्त बालकृष्ण दास जी, माण्कचन्द जी, सत्यनारायण शर्मा जी तथा डॉ. अशोक यादव जी को रामदरबार के चित्र और उपस्थित गोभक्तों को योगेश्वर कृष्ण एवं गोमाता के चित्र स्मृति चिह्न के रूप में भेंट किये।

''गोसम्पदा'' पत्रिका के प्रकाशक श्री निरोतीलाल अग्रवाल जी ने उपस्थित सभी गोभक्तों से पत्रिका हेतु अधिक–से–अधिक ग्राहक बनाने पर जोर देते हुए उसे अपनी मार्गदर्शिका समझकर पढ़ने के लिए निवेदन किया।

सम्मेलन के अन्त में मा. सावला जी की माताजी के स्वर्गवास पर शोक प्रस्ताव रखने के साथ ही उनकी दिवंगत आत्मा की शांति हेतु दो मिनट का मौन रखा गया। तत्पश्चात श्री कृष्णस्वरूप सैनी जी ने पधारे सभी गोभक्तों का आभार व्यक्त किया। उल्लेखनीय है कि गौशालाओं को दी जाने वाली अनुदान की राशि का पांचवां हिस्सा सैनी जी ही एकत्रित करते हैं। पीलिया का देशी इलाज भी सैनी जी करते हैं। वह पान में दवा लगाकर रोगी को देते हैं, जिसका कोई शुल्क नहीं लेते। रोगी स्वस्थ होने पर स्वयं ही यथाशक्ति गोमाता के लिए दान देते हैं। सम्मेलन में विहिप. के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया जी का ग्रोब्रान्ड्स से सम्बंधित पत्र भी पढ़कर सुनाया गया।

सम्मेलन में 60 गौशाला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर स्वामी बालयोगी जी , श्री जे.बी. मंगाराम, श्री महाबीर प्रसाद (एडवोकेट), श्री माणकचन्द अवध, श्री प्रकाश भारती, श्री हरिहर लाल पारीक आदि उपस्थित थे।

मां. शेखावत जी का सभी गोभक्तों एवं गोसेवकों से हार्दिक निवेदन

वैष्णवजन तो तैने कहिये, जे पीर पराई जाने रे।
पर दुख उपकार करे तो, गरब नहीं मन माही रे।।

परम आत्मीय बन्धुश्री,
वन्देधेनुमातरम्।

मेरी मान्यता है कि जिन पर प्रभु की कृपा होती है। वे उनको ही सत्कर्म करवाने के लिये चुनते हैं। आप भाग्यशाली हैं कि आप हम सर्वदेवमयी गोमाता की सेवा हेतु भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्धन परिषद के पुनीत कार्य में लगे हैं।

मैं 1946 से संघ का स्वयं सेवक बनकर पहले संघ कार्य का दायित्व निभाता रहा और वरिष्ठ प्रचारकों के आदेश से विश्व हिन्दू परिषद के गोसेवा आयाम में सन् 1995 से राजस्थान का कार्य भार लिये हुये हूँ। यह सर्वसत्य है, जिस सफलता से राजस्थान इस कार्य में और राज्यों से आगे है, उस सफलता का श्रेय केवल मुझे नहीं आप सभी गोसेवकों को है।

मेरी मान्यता है कि हम सब अपूर्ण हैं, पर सभी मिलकर पूर्ण हैं। यह यथार्थ है कि हम में एकात्म भाव रहेगा तभी ही सफलता मिलेगी, परन्तु मतभेद और मनभेद हुआ तो इस पुनीत कार्य में असफल रहेंगे। अतः आप सभी से विनती है, भूल हो सकती है पर उसको दर्शाने के बाद भूलकर फिर एकात्म भाव से कार्य करें। गोसेवा ईश्वरीय कार्य है, अतः भजन की यह कड़ी याद कर सेवा की नैया पार करनी है–

भगवान मोरी नैया, उस पार लगा देना।
अब तक भी निभाया है, तो आगे भी निभा देना।।

आज 85 वर्ष की आयु में मैं जो कुछ भी कार्य सम्भाल पा रहा हूँ उसमें आपका कंधे से कंधा लगाने से सफलता मिल रही है। मैं चाहता हूँ हम सभी कार्यकर्ताओं की माला का एक भी मणि अलग न हो। इसी भाव से सभी के चरणों में विनती है। साधुवाद।

भवदीय
जयबहादुर सिंह शेखावत

...तो आपकी गाय के बछड़ा नहीं, बछिया ही होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रमुख कृषि शोध संस्थान आईसीएआर देश में दूध उत्पादन बढ़ाने की रणनीति के तहत कृत्रिम गर्भाधान और प्रसंस्कृत वीर्य तकनीक के जरिए पड़ियों और बछियों की संख्या बढ़ाने की योजना पर काम कर रहा है। इस तकनीक में कृत्रिम गर्भाधान में ऐसे प्रसंस्कृत वीर्य का इस्तेमाल किया जाएगा जिससे गाय–भैंस बछिया या पड़िया को ही जन्म दे।

वैज्ञानिक समुदाय आम बोलचाल में इस विधि को 'सेक्सिंग' कहता है। कुदरती और सामान्य गर्भाधान में बछिया या बछड़ा होने की संभावना बराबर–बराबर होती है, पर नई तकनीकों के जरिए पशुपालक किसानों के लिए यह विकल्प उपलब्ध होगा कि वह कृत्रिम गर्भाधान प्रक्रिया में ऐसे बीज का चयन कर सके जिसमें जन्म लेने वाला पशु मादा ही निकले। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की मेरठ स्थित मवेशी परियोजना निदेशालय (पीडीसी) के प्रधान वैज्ञानिक श्रीकांत त्यागी ने कहा– इस तकनीक से डेयरी किसान अपनी रुचि के हिसाब से बछिया या बछड़ा प्राप्त कर सकेंगे।' निदेशालय के विजन–2030 दस्तावेज में उल्लेखित कई योजनाओं में से यह एक है। पीडीसी के निदेशक अर्जवा शर्मा ने कहा कि करनाल स्थित राष्ट्रीय डेयरी शोध संस्थान (एनडीआरआई) तथा हिसार स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान (सीआईआरबी) भी सार्वजनिक –निजी भागीदारी (पीपीपी) के तहत इस परियोजना पर काम करेंगे। इस प्रक्रिया में प्रयोगशाला में सांड के वीर्य की एक्स और वाई क्रोमोजोम्स युक्त स्पर्म को अलग किया जाता है और एक्स तथा वाई वीर्य का अलग डोज तैयार किया जाता है। इस प्रकार से तैयार वीर्य को 'सेक्स्ड' या लिंग–निर्धारित वीर्य कहा जाता है। हालांकि इस प्रकार के प्रसंस्कृत वीर्य से पशु में गर्भ ठहरने की संभावना अभी 35 से 40 प्रतिशत ही रहती है, जबकि सामान्य कृत्रिम गर्भाधान में पशु के गर्भधारण करने की संभावनाएं 55 से 60 प्रतिशत तक रहती हैं।

मौजूदा मशीनों के जरिये 200 एक्स क्रोमोजोम युक्त स्पर्म के पैक तैयार किए जा सकते हैं। इस तकनीक का उपयोग विकसित देशों में पहले से किया जा रहा है।

रा. सहारा, 21–10–22. (दिल्ली)

गोवध पर गुजरात में प्रतिबंध

अहमदाबाद। पावन धनतेरस से गुजरात में गोवध तथा इसकी अवैध हेराफेरी संबंधित नया कानून प्रभावी हो गया। गुजरात पशु–संरक्षण संशोधन अधिनियम–2011 को 19 सितंबर को राज्य विधानसभा ने पारित किया था। राज्यपाल ने हाल ही में इस पर मुहर लगा दी थी। इस कानून में दोषी पाए जाने पर एक से सात साल की कैद, 10 से 50 हजार रुपए के अर्थ दंड सहित सात प्रावधान हैं। हेराफेरी के मामले में पकड़े जाने वाले वाहनों को छह महीने अथवा केस का अदालत में निपटारा होने तक जब्त किया जा सकेगा। अभी तक राज्य में मुंबई पशु–संरक्षण अधिनियम–1954 प्रभावी था। वर्ष 1994 में गुजरात सरकार ने इसे बड़े पैमाने पर संशोधित (चौथा) किया था। इन संशोधन को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई। हालांकि केस में सरकार विजयी रही। 2005 में 26 अक्टूबर को सर्वोच्च न्यायालय ने संशोधन को वैधानिक ठहराया था।

इसलिए धनतेरस से प्रभावीः आसौवद बारस (द्वादशी) के दिन गाय–बछड़े सहित गौ की पूजा की जाती है। राज्य में पोलो उत्सव के दौरान आदिवासी गाय–बैल को सजाकर पूजा करते हैं।

साभार– दै. भास्कर

गोभक्त ऐरी जी का स्वर्गवास

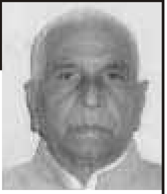

गोभक्त एवं हिन्दूराष्ट्रवादी श्री राज कुमार ऐरी का गत 29 सितम्बर को नई दिल्ली स्थित 1/9026, वैस्ट रोहतास नगर में निधन हो गया। उनकी माता जी का नाम श्रीमती मोहन देवी है और पिता का नाम स्व. तेलूराम जी था। उनका जन्म 15 अक्टूबर, 1927 को बखापुर धमाई, बलाचौट, जिला गढ़शंकर (पंजाब) में हुआ था।

श्री ऐरी जी का सारा जीवन धार्मिक ग्रंथ "रामायण" के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित रहा। उनकी एक पुस्तक 'रामवाणी' नाम से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में रामनाम से प्रारम्भ चौपाइयों का संकलन किया गया है। राम जन्म भूमि आन्दोलन में भी उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। वह सीनियर पोस्ट मास्टर (जी.पी.ओ.) के पद से सेवा निवृत्त हुए थे। अपने जीवन काल में अनेक साधु–सन्तों के सानिंध्य में रहते हुए सत्संग का लाभ भी उठाया। वह सनातन धर्म महासभा, दिल्ली के अध्यक्ष एवं श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा , दिल्ली के उपाध्यक्ष रहे। गोरक्षा परिवार उनकी आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित करता है।

Smuggling of Cattle Must Stop

"It is a usual matter in the India-Bangladesh border area." Halder said, adding that the proceeds from "cattle-smuggling are the main support for jihadi activities."

He also uncovered evidence of what he termed "an industry that floods India with Islamists, arms, and other contraband. Smugglers are linked to militias on both sides of the border," Halder said.

The Pioneer recently ran a piece by Anuradha Dutt ("Criminal Slaughter," September 23) about smuggling of cows from India into Bangladesh. Anuradha Dutt has questioned how it could be done so easily, since "these bulky animals are difficult to overlook in the course of their journey." One answer: "The laissez faire attitude of the Congress, socialist and Communist parties to the vital issue of protecting these gentle creatures." Her argument is compelling and having just completed an investigation into this criminal enterprise, I would add two more: Corruption and jihad, South Asia's two great scourges.

Early this year, two men contacted Bikash Halder, my Indian representative who works with me to stop Bangladesh's ethnic cleansing of Hindus. They said they had important information, so we arranged a late-night clandestine meeting in Kolkata with the two, 'Rahul' and 'Samir'. Rahul' began by saying how he previously did unspecified work for intelligence agencies that involved frequent trips between India and Bangladesh. Whatever it was, however, it did not bear

fruit, and the agencies dispensed with his services: but he stayed in the area and like Samir bought a house near the Bangladesh border "After 10 pm you can see everything," they said: specifically, cattle going out of India in exchange for arms and Islamists coming in, and members of the West Bengal Police involved in the transactions.

In fact, Rahul said that the smugglers were jihadis (something he claimed to know from his earlier forays) whose success depended on corrupt Indian officials. Both men were so insistent that they invited us to spend the night with them and see for ourselves. While I had commitments outside West Bengal and eventually had to return to the United States, Halder took them up on their offer this summer.

He travelled to the Bongaon and Basirhat sub-divisions of North 24 Parganas where he met our informants. Since Samir told us in Kolkata that he could see the illicit activity from the back of his house Halder went to their homes waited with them for nightfall. Shortly after 10 pm, he confirmed what they reported in Kolkata: Cattle being taken brazenly from India to Bangladesh. It was not Halder's first encounter with cattle-smuggling.

"It is a usual matter in the India-Bangladesh border area." he said, adding that the proceeds from "cattle-smuggling are the main support for jihadi activities." He also uncovered evidence of what he termed "an industry that floods India with Islamists, arms, and other contraband. "Smugglers are linked to militias on both sides of the border," Halder said. These arrangements make the police, who are supposed to enforce the law, nothing more than paid armed escorts for those who are breaking it.

He already knew that the West Bengal Police were involved in cattle-smuggling, but his observations from the back of Samir's house and subsequent investigations showed more extensive complicity. "I have seen the following scenario. Top to bottom, security personnel take bribes. Some agents of both Indian and Bangladeshi agencies are involved with smuggling, and both of them shelter jihadis coming into India."

He also uncovered evidence of financial ties between higher level authorities in the West Bengal Police. "I know it personally," he insisted. "Every local police station in West Bengal has a person called a `Dak Master, who collects the bribes." Much of that, he said, comes from brokers who bring in Bangladeshis illegally, often with the help of BSF personnel. "Frequently, I have faced those incidents," he said.

In 2008, we observed the same BSF complicity in the tiny town of Panitanki on the India- Nepal border. A bridge over the Mechi River allows people and vehicles to cross freely. As a steady stream of trucks, covered wagons, and men carrying large packages entered India, my Bengali colleagues would point to one and say 'arms', to another and say 'drugs.' "That one has counterfeit bank notes," one said, "a big smuggling business.

The illegal activity was so open that even I became adept at identifying the contraband. No one seemed concerned even though the area is notorious for smuggling and a known entry point for Islamist and Maoist terrorists into India. No one checked any packages or stopped a single individual — until I pulled out my camera. As we passed a

pile of sandbags, two soldiers emerged and brandished their rifles and demanded. I put away my camera. I protested vehemently until they threatened to confiscate it.

In exchange for putting it away, I asked them to let me cross the bridge into Nepal. They demurred, insisting that as an American, I needed a Nepalese visa to cross, even though third country nationals frequently take rickshaws or other conveyances into Nepal. But they let me walk to the border in the centre of the bridge where it became clear why the soldiers did not want me taking pictures. The flow of contraband was heavy, continuous and open. We also saw people running across the dried river bed on either side of the bridge, many carrying large parcels.

While our enemies do this for a principle, these officials do it for nothing more than money: Changing the demographics along the border, compromising India's security and throwing away one of its greatest legacies in its reverence for life.

(The writer campaigns for minority rights in Bangladesh.)

गोरक्षार्थ त्यागमयी तत्परता

विदिशा (म.प्र.) से लगभग 10 मील दूर मूडरा (गजार) ग्राम निवासी एक बढ़ई (सुथार) के जीवन की यह सत्य घटना है। ग्रीष्म ऋतु में एक दिन संयोग से उनके मकान में आग लग गयी। मकान में लकड़ी, घास और उपलों का भण्डार था। मकान की छत बाँसों और खपरैल से छायी हुई थी। मकान में लगी आग को देख कर बढ़ई और उनके परिवार के लोगों ने अपना महत्वपूर्ण सामान घर के बाहर फेंकना आरम्भ कर दिया। गांव निवासियों ने भी सामान निकालने तथा पानी ला–लाकर आग बुझाने में बहुत तत्परता से सहायता की। मकान का महत्त्वपूर्ण सामान तथा प्राणियों–वृद्ध, बाल–बच्चे, स्त्रियों–सबके बाहर हो जाने के बाद कुँओं से पानी ला–लाकर अग्नि को शान्त करने का प्रयास किया जाने लगा, परंतु पर्याप्त जल के अभाव में तथा वायु की गति विपरीत होने के कारण आग फैलती ही जा रही थी। मकान में रखे कण्डों, लकड़ियों तथा घास में भी आग लग जाने के कारण अग्नि वेगपूर्वक पूरे मकान में फैल चुकी थी। उसी समय बढ़ई की पत्नी को याद आया कि गाय–बछिया तो सार (बरामदे)–में ही बँधी रह गयी हैं! वह घबराने लगी–हे राम! अब क्या हो?कैसे क्या किया जाय?आग चारों ओर फैल चुकी थी। गाय–बछिया दोनों का जीवन संकट में था। आग की लपटों की तपन से त्रस्त हो गाय–बछिया दोनों रँभाने लगी थीं।

गो–माता तथा बछिया की करुण पुकार सुनकर बढ़ई से अब न रहा गया। सबके देखते–देखते वे अग्नि की लपटों की परवाह किये बिना तत्काल मकान में घुस गये। सार में पहुंचते ही तेज लपटों से उनके शरीर के कपड़े जलने लगे। वे उनको फेंक, एक पल का विलम्ब किये बिना ही गाय–बछिया के पास पहुँच गये और दोनों को साँकल से खोल दिया, परंतु आग ने तो उन निरीह जीवों को चारों ओर से घेर रखा था। वे निकलें भी तो कहाँ से?तभी दैवी प्रेरणा से प्रेरित हो उन सज्जन ने पास ही रखे हुए एक मूसल से सार की दीवारें, जो कच्ची थीं, तोड़ करके किसी तरह छोटा–सा रास्ता बनाकर गाय–बछिया को बाहर निकाला। जब वे स्वयं बाहर आने लगे तो जगह–जगह जल जाने के कारण एकदम बेहोश होकर गिर पड़े। उनका चेहरा, बाल और दोनों हाथ काफी झुलस गये थे। लोगों ने उन्हें कम्बल ओढ़ाकर तत्काल विदिशा के अस्पताल में ले जाकर भर्ती करा दिया। कुछ समय पश्चात् जब उन्हें होश आया तो उनका पहला प्रश्न था–' गाय–बछिया को तो कुछ नहीं हुआ?वे दोनों ही ठीक हैं न?' उपस्थित लोगों ने बता दिया कि 'भाई, जहाँ तुम–जैसे गो–रक्षक हों, वहाँ भला गो–माता का एक रोम भी कैसे जल सकता है?' वस्तुतः भगवतकृपा से (चमत्कारिक ढंग से) गाय तथा बछिया दोनों के शरीरों पर आग का कोई भी कुप्रभाव न हुआ। यह सुनकर सुथार का मुख एक अप्रतिम सन्तोष की आभा से दीप्त हो उठा। गो–माता के आशीर्वाद से उन बढ़ई महाशय को शीघ्र ही आराम भी हो गया। ठीक होने पर उनकी त्वचा तो अवश्य ही कई जगह से सिकुड़ गयी तथा हाथ–पैरों में जलने के चिह्न भी स्थायीरूप से बन गये, पर अब वे महोदय प्रसन्न एवं शान्त–चित्त हो जीवन–यापन कर रहे हैं। पहले की अपेक्षा आज उनका जीवन अधिक सुखी, श्री सम्पन्न एवं शान्तिपूर्ण है। गोरक्षा से सब कुछ सम्भव है।

रघुराजशर्मा चतुर्वेदी

साभार – "कल्याण" पत्रिका

वन्दे गौ–मातरम्

विश्व की जननी विभव विस्तारिणी गौ मातरम्।
शक्ति सन्तति सौख्यपद दुःखहारिणी गौ मातरम्।।
ईश की तू देन अनुपम वन्दनीया विश्व की।
निःस्वार्थ निर्मल लोक की उपकारिणी गौ मातरम्।।

विश्व भी बनता नहीं तब धेनु जो होती नहीं।
कह रहे हैं वेद वसुधा धारिणी गौ मातरम्।।
लोक क्या परलोक में भी तू सहायक बनी रही।
हैं सिद्धियाँ तेरी सदा अनुसारिणी गौ मातरम्।।

चैन से कैसे रहेंगे जो सताते हैं तुझे।
हर्षवर्धन भक्त की भयहारिणी गौ मातरम्।।
प्रेम से पलती जहाँ श्री फूलती–फलती वहाँ।
निर्बलों में बल अतुल संचारिणी गौ मातरम्।।

गऊ माता की वेदना

मैं कटती रहूंगी तुम देखते रहियो।
शेरों को बचाओ और गिद्धों को बचाओ।

मैं मरती रहूंगी तुम देखते रहियो।
मेरा दूध पियो सौ वर्षों तक जियो।

मैं घटती रहूंगी तुम देखते रहियो।
गोबर की खाद से मूत्र के स्वाद से।

मैं रोग भगाऊं तुम देखते रहियो।
पितरों के तर्पण में देवों के अर्पण में।

मैं तृप्ति कराऊं तुम देखते रहियो।
मुझको बचाओ सुख सम्पत्ति पाओ।

मैं मोक्ष दिलाऊं तुम देखते रहियो।
खिंचवाओ न खाल मेरा होना बुरा हाल।

देश बने खुशहाल तुम देखते रहियो।
खेती मैं कराऊं सबका पेट मैं भराऊं।

बैलों पै गिरती गाज तुम देखते रहियो।
कैसा ये राज मेरी सुनता न समाज।
मेरी बंद है आवाज तुम देखते रहियो।

–भक्त राज सिंह सैनी
56 नं. नाहरपुर, सैक्टर–7,
रोहिणी, दिल्ली–85 दूरभाष– 9555991641

Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-S.W.-15/4027/2009-11
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
मुद्रण तिथि : 11 नवम्बर, 2011

गोरक्षा आयाम (विहिप) का अखिल भारतीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

देवलापार (नागपुर)। विश्व हिन्दू परिषद, गोरक्षा आयाम का "अखिल भारतीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग" 8 से 13 अक्टूबर, 2011 तक "गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, नागपुर में आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण वर्ग का उद्घाटन करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया जी ने कहा कि यदि गाय को बचाना है तो पंचगव्य के अधिक-से-अधिक उपयोग के रास्ते निकालने होंगे। उन्होंने कहा हमें पांच विषयों पर काम करना चाहिए।

गोमाता का पूजन करते हुए समस्त पदाधिकारीगण

1. नस्ल सुधार कर दुग्ध वृद्धि करना। 2. जैविक कृषि के लिए देशी खाद बनाना।
3. पंचगव्य से औषधियों का निर्माण करना। 4. पंचगव्य से ही सौंदर्य प्रसाधन एवं दैनिक उपयोग की वस्तुएं, जैसे-फिनाइल, मच्छर मारने वाली क्वाइल आदि बनाना।
5. पंचगव्य चिकित्सा केन्द्र अलग-अलग जिलों में स्थापित करना।

वर्ग में उपस्थित विहिप. के केन्द्रीय मंत्री एवं गोरक्षा आयाम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री खेमचन्द शर्मा जी ने कहा कि प्रशिक्षण वर्ग का उद्देश्य "चिड़िया की आंख पर निशाना लगाना" यानी एक ही लक्ष्य- गाय कैसे बचे?इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पंचगव्यों का अधिकतम उपयोग कैसे बढ़ाया जाए, इसके लिए सभी प्रकार तन-मन-धन से कार्य करने की आवश्यकता है।

गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार में आयोजित अ. भा. कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग के दौरान मंचासीन दिखाई दे रहे हैं विहिप. के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री डा. प्रवीण तोगड़िया जी, विहिप. के केन्दीय मंत्री एवं गोरक्षा आयाम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री एवं अन्य पदाधिकारीगण।

प्रशिक्षण वर्ग का समापन विहिप. के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं गोरक्षा आयाम प्रभारी श्री हुकुमचन्द सावला जी ने किया। वर्ग में वैद्या नंदिनी भोजराज जी, सुरेश डबले जी एवं सुनील मानसिंहका जी ने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देते हुए पंचगव्य से खाद, औषधि तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं का निर्माण करना सिखलाया। वर्ग में मौजूद 31 प्रान्तों के 140 कार्यकर्ताओं ने प्रशिक्षण का लाभ उठाया।

इस अवसर पर श्री उमेश पोरवाल, श्री त्रिलोकी नाथ बागी, श्री बासुदेव पटेल एवं श्री लाल बहादुर सिंह आदि उपस्थित थे।

सम्पादक - जयप्रकाश भारद्वाज द्वारा सम्पादित, प्रकाशक व व्यवस्थापक निरोतीलाल अग्रवाल ने
साइबर क्रियेशन्स, जे ई-9, खिड़की ऐक्स. मालवीय नगर, नई दिल्ली-17, से मुद्रित कर
भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप) संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की।